वीरेन्द्र मल्लिक



अग्नि-शिखा

बीसम शताब्दीक षष्ठ दशकोत्तर कालक युवा प्रवासी, मातृभाषानुरागी, परम्पराक प्रति विद्रोही तेवर आ नवीनताक प्रहरी, अग्निजीवी आलोचक, कथाकार, कवि, गवेषक, रंगकर्मी आ सम्पादक अपन प्रतिभाक प्रसादात वैविध्यपूर्ण विविध कृतिसँ मैथिली जगतकेँ आन्दोलित कयनिहार वीरेन्द्र मल्लिकक अमूल्य अवदानक साक्षी थिक विविध पत्रिकादिमे प्रकाशित विविध विधादिक विविध रूपा रचनादि। हिनक काव्य कृति परम्परावादीकेँ जतबे उद्वेलित कयलक ततबे नवतावादीकेँ अनुप्राणित। वर्तमान शताब्दीक प्रथम दशकमे अपन काव्य 'अग्नि-शिखा' लऽ कए पुनः साहित्योन्मुख भेल छथि जे साहित्यानुरागीकेँ साहित्यालापक स्वर्णिम अवसर प्रदान करत। किम् अधिकम्।



150/-

अग्नि–शिखा

कविता-क्रम

❑

शहरसँ गाम धरि

एक दिन हम निश्चय भऽ जायब बताह
निट्ठाह पागल—
आ पसरि जायब आगि जकाँ सभतरि
शहरसँ गाम धरि।
शहरमे बन्द जहलक चोर जकाँ
जंगली सूगर,
गीदड़ आ खच्चर
काटए लागत अहुरिया-कच्छर आगिक तापसँ
दग्ध करए लागत
एक दोसरकेँ 'रेप'
पीबए लागत शोणित, खाय लागत मासु
फेरसँ एकटा नव महाभारत
जन्म लेत वियतनाम, कोरिया आ बाङ्ला देश—
जन-क्रांतिक आगि लागि कए रहत,
मिथिला जागि कए रहत।

गामक सभ सूदिखोर महाजन, घुसखोर नेता,
लबरा पंच आ बैमान मुखिया—
करए लागत आपसमे माथ-फोड़ौअलि
सड़क, नाला, बान्ह,
स्कूल आ पूलसभक स्कीम रहत ठप्प।

स्त्री नहि औतीह
लक्ष्मण-रेखाकेँ लाँघि कए घरसँ बाहर,
बालिका की सूति सकतीह—पाकिस्तानी
मशीनगनक नीचा
रोशन आरा जकाँ निर्द्वन्द्व ?
मूर्ख शिक्षक रटबैत रहताह
धिया-पुताकेँ
अनन्त काल धरि हिन्दी व्याकरण,
आ मैथिली कनैत रहतीह घरमे बन्द—
अपन सन्तानक दुर्बुद्धिपर, क्लीवजनक नपुंसत्वपर
सरकार उत्तान भऽ सुतल रहत
कानमे तेल धए निःशब्द—
तैयो नहि टूटत ककरो निन्न
आँखि नहि फुजत
अन्हराक जेहने जगने,
तेहने सुतने—कदली वन जरैत रहत,
जरैत रहत धह-धह जम्बूद्वीपक नगन गाछ
ठाढ़ रहत मूड़ी निहुरौने
आ
आ सीता-सरस्वती बेरि-बेरि उठाओलि जयतीह,
दबाओलि जयतीह,
ठकलि आ फुसलाओलि जयतीह
रावण करैत रहत राजनीति
जनकपुरमे अड्डा जमौने रहत, स्मगलिंग करैत
घोड़ा आ फर्जी चालि चलैत रहत।

मुदा नहि मानत, किन्हु नहि मानत
कोशी, कमला आ बलानक पानि—
होरी मचा कए रहत,
अधिकार देया कए रहत।

एक दिन हम निश्चय भऽ जायब बताह
निट्ठाह पागल,
आ पसरि जायब आगि जकाँ सभतरि—
शहरसँ गाम धरि।
❑

एक बुट्टी मासु

एकटा विषधर साँपक कुण्डलीमे हमरा लोकनि लेपटायल
पड़ल छी निस्सहाय गाम, नगर आ महानगरक छोट-पैघ संस्था
वमन करैत रहैछ एकसँ अनेक सूत्री प्रस्ताव
पत्र-पत्रिका आ अखबारमे। सरकार फेंकि दैछ आगाँमे—
एक बुट्टी मासु आश्वासन, कोनो पदवी, कोनो कुर्सी
आ हमरालोकनि कुर्सीसँ लस्सा जकाँ सटि जाइत छी प्रसन्न,
कुकूर जकाँ हड्डीकेँ चुसबामे निमग्न अपनेमे करए लगैत छी कटाउझ
आ हड्डीकेँ मासु बूझि अपनहि रक्तकेँ पीबए लगैत छी।
सालक साल एहिना बीति जाइछ, हम अपनाकेँ धन्य बुझैत छी।
आइ नेता, कार्यकर्त्ता आ बुद्धिजीवी-वर्ग,
आइ स्त्री, छात्र आ क्रांति-दल—
सभ भए गेल अछि जड़, निस्पंद। नहि होइछ हमरामे
कोनो प्रतिक्रिया अड़ोस-पड़ोसकेँ देखलो सन्ताँ,
नहि होइछ कोनो प्रतिफल संसारकेँ देखलो उत्तर। आइ जखन कि
लिखल जा रहल अछि हमर भाग्यक इतिहास—
कुंभकर्ण सुतल अछि,
सुतल रहत अनन्त काल धरि गबदी मारने, अनठौने
पढ़ैत रहत चुपचाप गीता वा कामसूत्र
आ नहि तऽ विद्यापति पदावली। आइ हमर घर भऽ गेल अछि

गामी धर्मशाला आ लोक भऽ गेल अछि ढेलमारा गोसांइ
आ।।।।।।।।।।ह
हम एतेक ने भए गेलहुँ अछि मजबूर
जे बिना आज्ञाक खोंखियो नहि कए सकैत छी,
हँसनाइ तऽ दूर।
हम एतेक ने भऽ गेलहुँ अछि क्लीव, नपुंसक
किंवा निर्लज्ज
जे अपना माइयोकेँ माय नहि कहैत छी।

एक डिब्बा क्रांति

बुद्धि नहि, धन नहि
शासनक ई मांग थिक—
बल जकर लाठीमे
तकरे ई राज थिक।

मानल अहाँ कवि छी,
लेखक महान, बुद्धिमान, ज्ञानवान छी
भारतीय संविधान केर अष्टम अनुसूचीमे
मैथिलीक मान्यताक करइत आह्वान छी,
अधिकारक रक्षा ले'
व्यर्थ किएक रहि-रहि कए
सरकारक देहकें, करइत उघार छी ?
बुद्धि नहि, धन नहि
शासनक ई मांग थिक—
आगि जकर कलममे
तकरे ई राज थिक।

मानल अहाँ छात्र छी,
संसारक गति-विधिसँ परिचित, पकठायल छी
मातृभाषाक माध्यमसँ
पढ़ए ले' बेहाल छी

ट्राम नहि जरबैत छी
मूर्ति नहि तोड़ैत छी
मैथिलीक विरोधीकें
मूड़ी नहि मोचड़ैत छी ?
इन्दिराक आगाँमे धरना कहाँ दैत छी ?

मानल अहाँ जनता छी,
धरती केर राजा आ मिथिला-विधाता छी
भोट अहाँ खसबैत छी
जातिकेर नाम पर
पापी, बैमानकें,
नपुंसक संतानकें
अनेरे ले' जितबैत छी ?
केहन अहाँ लोक
आर ककर संतान छी,
वियतनाम, बंगला केर सुनैत नहि गान छी ?

बुद्धि नहि, धन नहि
शासनक ई मांग थिक
जोर जकर थोंथीमे
तकरे ई राज थिक। ❑

हे हमर अग्रज शान्त भऽ जाउ

अपने लोकनि भेलहुँ असफल मनुक्ख,
एक निश्चित स्वप्न-सीमाक मध्य जिनहार
एकटा पराजित पीढ़ी—फड़फड़ाइत डिब्बीक बामरि
किछु नहि कए सकलहुँ,
नहि कए सकलहुँ डिब्बी भरि तेलोक ओरियान
एकटा सलाइक काठियो नहि राखि सकलहुँ—जे डाहि लीतहुँ
अपन देह, अपन सौख, अपन आत्मा
मुदा सेहो नहि भेल। अपनहि घरमे बन्द, छटपटाइत
रहलीह मैथिली, आत्म-संघर्ष करैत
मुदा नहि होअ देलियनि, हुनका बाहर। जीवन भरि करैत रहलहुँ
नौकरी, बनल रहलहुँ क्लर्क, पीउन, भनसिया
एकटा सुविधाक पाछा करैत रहलहुँ कटाउझ, जीवित-मृत बनल रहलहुँ
भिन्न, बिलकुल भिन्न अपनहि मातृभाषासँ। आ
कोनो एकटा टेटहा सुग्गा—कोनो सेमरक फूलक तलाशमे
दिनभरि टैं-टैं करैत रहल—विद्यालयक प्राङ्गणमे,
कोनो कक्षमे, कोनो सभा-भवनमे। ताश, चौपड़ि, शतरंज
किंवा पचीसीमे, तेलियाक बरद जकाँ
भिनसर कैं साँझ बनबैत रहलहुँ, दोसराक निन्दामे प्रसन्न होइत रहलहुँ।
आनक घरमे लुत्ती लगा

घूर तपैत रहलहुँ—व्यर्थ मंदिरमे
पढ़ैत रहलहुँ अपने प्रार्थन-पत्र
असफल व्यक्तिएटा
देवी-देवताक चिंतन करैछ—से नहि सोचलहुँ,
नहि सोचलहुँ किएक जिबैत छी ? किएक
जरदगब बनल नवतुरियाक बाटकैं छेकने छी, कुर्सी हथियौने छी
आपसमे लड़ि-झगड़ि
आत्म-तुष्टिक चन्द्रोदक पिबैत छी,
तृप्त-परितृप्त भऽ, साले साल बच्चा सभक
पलटनकैं ठाढ़ कए, पुरुषार्थक दंभमे अपनाकैं ठगैत छी ?
किएक नहि शांत भऽ
रामनाम लैत छी, विजयाक सेवन कए
आत्मलीन होइत छी ? करए दीअ काज,
बीचमे टांग जुनि अड़ाउ—हे हमर अग्रज
शांत भऽ जाउ!

❑

बंगाल बन्द

बन्द अछि शहर
सर्द लाश जकाँ पसरल एतए सँ ओतए धरि
पाउज करैत जीवित मृत जनता—गौ माता,
बन्द कोठरीसभक मध्य
ढाहि जाइछ कौखन कौआक कॉव-कॉव निस्संगताक भीत
गोली छुटबाक अवाज, बमक धमाका
चीरैत अछि कानक झिल्ली,
मोन, आत्मा, प्राण। सड़कपर बिछाओल गेल जानवर,
जानवर आ लाल टहटह शोणित
करैत अछि युद्धक घोषणा
अलीपुर जेलमे आब जगह नहि,
सुइयो भरि स्थान नहि जे ठाढ़ कयल जाय मुर्दा शहरक लाशकेँ
जे ठूसल जाय बोरामे बन्द
आलू-भाटा जकाँ लोक-वेदकेँ,
नक्सलाइटक नाम पर एतुक्का जवान खूनकेँ। 'हल्ला जुनि कर,
राति नहि जा सकलहुँ बजार,
'साली फिलिम भी बन्द है'—बाजल कलुआ चमार
'की करैत छें'—आइ एहि चौबीस घंटाक भीतर
शहरक जनसंख्या बढ़िकए भऽ जयतैक लाखक उपर
करोड़ो टाकाक लगतैक घाटा
आर की कए सकतैक इन्दिरा-सरकार ?'

'बेस, बन्द कर आब ई बकबक'—बाजलि ओकर आँगनसँ
होइत कबकब--'बुझल नहि छैक
शहरमे पी०डी०एक्ट लागू भऽ गेलैक अछि आब
तेँ हे बुधुआक बाप!
कलबल सूति रहह, पीबि एक गिलास पानि
काल्हुक बात छोड़ह'—बाजलि चतुरा चमाइन।

❑

साँझ

झील-जलमे आगिसँ
लीखि गेल हो क्यो नाम—सूरज,
पुनर्मिलनक चिर प्रतीक्षामे—जेना हो
छोड़ि गेल क्यो पत्र
लेटर बॉक्समे ई साँझ!

❑

मैथिल ललना

आँखिमे काजर, माथमे सेनुर
ठोर रंगल जनु पुष्पित ओरहुल,
पढ़िया ललका छीट पहिरने
बिनु चप्पलकेँ घूमि रहल छथि—
चौरंगीमे मैथिल ललना।

❑

साँप

जन विहीन दिवस
ने कतहु शोर, नहि संग्राम
लोक भेल उदरस्थ अछि निज
गेह-कारागारमे भऽ त्रस्त—चुप आ
शांत, जेना हो फोलि लेने ग्राम्य बाला
हाथसँ कुंचित सघन घनराशि कुंतल
मुइल साँप पड़ल जेना हो बाट पर
अनमन लगैए सड़क
तहिना आइ!

❑

मास्टर साहेब

मुँहमे पान, हाथमे घड़ी
खन इंगलिश, खन बाजथि हिन्दी
कौखन कुर्त्ता साँची धोती,
कौखन बुश्शर्ट-पेंट पहिरने
घरे-घरे घूमि रहल छथि—
कुकूर जेकाँ मास्टर साहेब!

❑

मैथिली आन्दोलन

मैथिली आन्दोलन
जेना कोनो बच्चाक बम-फटाका,
जे आगि लगौलो उत्तर
फुसफुसा कए रहि गेलैक अछि
आओर हमरा लोकनि प्रतीक्षामे छी
जे आब बम फुटत, तब बम फुटत।

❑

मिनि गर्ल

पारदर्शी कपड़ामे
आवृत-अनावृत
सोंटल देह-यष्टि
निस्सन कोपर-जाँघ
३४ : २४ : ३४
डायमिटर-माप
ई 'मिनि गर्ल' थिक।

❑

माइ डियर इन्दिरा

मुक्ति-युद्धक आगि
लागल अछि, हमर ई देह धीपल लोह
धह-धह कए रहल अछि प्राण
तैं हे बन्धु! दमकल जुनि मंगाबी आब
किन्हु नहि मिझाएत आगि,
किन्हु नहि जरत ई देह, आत्मा, प्राण।
अनेरे नहि बिछाबी जाल-शासन-तंत्र,
नहि पोल्हाबी दए आश्वासन-मासु बेरि-बेरि आब
भाषाकेँ करू उद्धार
दए स्थान अष्टम अनुसूचीमे हे हमर प्रिय इन्दिरा सरकार!

नहि सहत अन्याय हम्मर लोक कनियो आब,
नहि सहत सतमाए सन व्यवहार,
नहि सहत अपनेक दुरंगी नीति केर तरुआरि
सुनत नहि, नहि सुनत अपनेक मधुर मधु-सिक्त भाषण, बात
आश्वासन बहुत पौलक, बहुत सहलक
दुधारी मारि, बड़ भयंकर होइत अछि गृह-युद्ध,
कौखन एक लुत्ती आगिसँ भऽ जाइत अछि सुड्डाह
गामक गाम, तमिलनाडु, लंका देश होइए छाउर।

उठल अछि देश मिथिला सूति कए पुनि आइ,
संचित कए चुकल अछि शक्ति लव–कुश
दए रहल ललकार पर ललकार अछि निज तातकेँ ओ आइ,
माय मिथिलाकेँ बनाबए लेल ओ स्वाधीन
कए रहल हुंकार पर हुंकार अछि दिन–राति।
उठल नेपाल, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सहर्षा, पूर्णिया, मुंगेर, भागलपुर
करै अछि गर्जना कमला–बलानक धार
कोशी कए रहल फुफकार
दियौ तैं ध्यान, सुनियौ कानसँ जे भए रहल अछि गान
क्रांतिक आइ,
माइ डियर इन्दिरा, माइ डियर गाँधी.........माइ............!

स्वाधीनताक आँगनमे

स्वाधीनताक आँगनमे ठाढ़
माथ उठौने, हम आमक एकटा पिपही
आ हमरा चारुभर अछि विष–वृक्षक समूह आ तकर
शाखा–प्रशाखाक सहस्त्रवाहु
बेधित कए रहल अछि सूर्पनखाक दंशाघात। हम नहि बुझलहुँ
सुख ककरा कहैछ, जन्महिसँ राखल गेलहुँ बन्द
पञ्चवर्षीय प्रयोगशालामे। नहि भेटल विकासक स्वाधीन जमीन,
नहि भेटल रौद, वायु, वर्षाक अमृत वारि
नहि भेटल जीवनोपयोगी शिक्षा, नहि देल गेल रण–कौशलक प्रशिक्षण
नहि भए सकल नौकरीक प्रबन्ध—बेकारी सुरसा बनैत चल गेल।

स्वाधीनताक आँगनमे ठाढ़
बम लेने हाथमे निर्भीक, हम एकटा छात्र,
विश्वविद्यालयक प्राङ्गणमे पसरि रहल अश्रु गैसक धूम,
उपकुलपति–प्राचार्य
पड़एबाक ओरियानमे ठाढ़—नहि देखाइ दैछ कोनो बाट।
परीक्षा–भवनमे उड़िया रहल अछि सगरे प्रश्न पत्र,
परीक्षार्थीसँ बेसी सहायकगण, देखना जाइछ व्यस्त,
परीक्षक देखि छूरा, भऽ रहल संत्रस्त।

मचि गेल अछि अनघौल—प्रश्नोत्तर लिखाओल जा रहल अछि
ध्वनि-प्रसारण-यंत्रसँ, कए शोर।

स्वाधीनताक आँगनमे ठाढ़
पाँजर-सँ-पाँजर सट्टल, हम एकटा बोनिहार, मजदूर, किसान,
भेटल अछि हमरा रौदी, बाढ़ि, रुग्न बीया, ऊसर खेत—
देल गेल अछि सरकारी अनुदान, प्रदान कएल गेल अछि टैक्सक 'पद्मश्री'
रटाओल गेल अछि एकटा मुहाबिरा : जय जवान जय किसान
राशनक क्यूमे ठाढ़—भए जाइत अछि भिनसरसँ साँझ
दिनक दिन पड़ैत छी उपास, चीनी देखला भए जाइछ मासक मास
मटिया तेलक कंट्रोल
साँझ देखाएब से नहि भेटैत अछि मोल
प्रकाशक बदला भेटल अछि महा अन्धकार,
शिक्षाक कोन बात, पेट भरले पर होइत छै' कोनो काज
सत्य कहब होइत छैक अपराध,
पढ़ब-लिखब एहि युगमे बनि रहल अभिशाप!
❑

कीर्तन

रौद चार परसँ उतरि सुचिक्कन आँगनमे
हेरा जाइत अछि : हड़तालक अर्थ एकटा आर दिन उदास
आफिस जएबासँ छुट्टी आ बस-ट्रामक भीड़सँ मुक्ति
एकटा चिल्होड़ि चुपचाप उतरैत अछि आकाशसँ आ सरपतक
सघन वनमे हेरा जाइत अछि। मुदा कतहु किछु नहि होइछ, क्यो
किछु नहि करैछ—खाहे कोनो गामा पहलवान हो वा धीपल हीटर सनक
लाल गर्म स्त्री,
सभक छाबा मे दर्द.........फेफड़ा मे यक्ष्मा, सभ दूहल अतड़ी जकाँ
पीयर, उदास आ बेहोश........।
देखला पर अकास आ पृथ्वीक मध्य होइत रहैछ
दिन-राति एकटा शीतयुद्ध आ खरिहानमे बरसैत अछि
बम, लेहू, पीलिया बोखार—गाम, शहर आ महानगरमे
हनुमानक संख्या बढ़ि रहल अछि नित-प्रति कार्यालयमे, सभामे, अखबारमे
आ नेता सभक आवासगृहमे होमए लगैछ अष्टयाम—ढहैत-ढनमनाइत
प्रजातंत्रक नाम। बीयरक समुद्रमे
दहाए लगैछ स्तनक केक, हेलए लगैछ नितम्बक सोन माछ
आ डाँरक रेलिंगसँ कूदि पड़ैछ एकटा गोरिल्ला—हमरा लोकनि
देखैत रहि जाइछ। वशीकरण मंत्रक प्रभाव
कैकटा पड़बा काटल जाइछ, छोड़ल जाइछ गंगामे असंख्य शांतिक नाव

अनेकानेक लोक पैसि जाइछ गंगामे आ करए लगैछ
अपना-अपना रीछकेँ मलि-मलिकए साफ
पूजा-धेयान भऽ जाइछ एहना अवस्थामे एकटा 'फार्स'
होमए लगैछ एक संग सार्वजनिक रूपमे बलात्कार—नूआ झाड़ि,
सड़क केँ चियारि
जंगल आ लानकेँ ओछाओल जाइछ—नेताक आगमनपर
फूल आ पान चढ़ाओल जाइछ,
सजाओल जाइछ लाल फीता आ कैंची, हनुमान भऽ जाइछ प्रसन्न
एक गद्दी सेनुरपर आ हमरालोकनि बढ़ए लगैछ
ओकरे पाछाँ गर्दभ चालिमे
मूड़ी लटकौने-झालि बजबैत, धुतहू फुँकैत, जय-जयकार करैत।
हमरा लेल मौसमक कोनो अर्थ नहि रहि जाइछ,
नहि रहैछ हवा, पानि आ रौदक कोनो चिंता—शरीरक एक विशेष अङ्गमे
होमए लगैछ विश्व-युद्ध, जकरा भयसँ
होमए लगैछ अश्लीलताक यक्ष्मा हमरा अग्रज केँ आ ओ सभ
केबाड़ बन्द कए कीर्तन करबामे भऽ जाइछ लीन!

❑

कैंसर

दूर-दूर धरि पसरल निष्क्रियताक समुद्रमे
भसिया गेलहुँ अछि आइ
हमरालोकनि कानमे तेल ढारि भऽ गेलहुँ अछि निश्चिन्त
सूति रहलहुँ अछि कलबल कुंभकर्णी निद्रामे अपन सभ मनोरथ डाहि
नोन, तेल आ जारनिक खेलमे संलग्न हमसभ—
माय-बाप, भाय-बहीन, काका-काकी, गौआँ-धरुआ भऽ रहलहुँ
अछि कृतकृत्य
अपनामे लड़ि-झगड़ि, कोर्ट-कचहरीमे पानि जकाँ टाका बहाय
शान चढ़ा रहलहुँ अछि अपना-अपना पुरुषार्थपर—
बीझ भेटयबाक प्रयासमे भऽ गेलहुँ अछि लुल्ह
अपन दसो आंगुर काटि आह्लादित भऽ रहलहुँ अछि नित्यप्रति
कोनो अगत्ती नेना जकाँ
कुकूरक देहपर मूति अनेरे ठिठिया रहल अछि समाज
बुद्धिजीवी-वर्ग बनि गेलाह अछि दर्शक मात्र
नहि छनि कोनो सरोकार अपन देश, भाषा वा माटि-पानिसँ आब
खाहे लोक मरओ वा जीबओ—
कुर्सी रहबाक चाही सुरक्षित, देश पड़ि जाओ बेमार
पसरि जाउक चहुधा संक्रामक रोगक कीटाणु
मुदा डाक्टर नहि निकलताह घरसँ बाहर
किन्नहु नहि करताह रोगक उपचार
अकाल पीड़ित जनता कए रहल हो आर्त्तनाद

मुदा नेता, नहि निकलताह भोटक बाद
मंत्रिमंडल चलैत रहत,
भंग होइत रहत, बदलैत रहत सरकार—
शिक्षक, प्रवक्ता, प्राध्यापक वा प्राचार्य
कुर्सी पर औंघाय
करैत रहताह कर्त्तव्यक इतिश्री अखबारक पन्ना चाटि,
खाहे चूल्हिमे जाथु छात्र
ओ किएक बनताह ओकरा डाँटि कए कुपात्र ?
चुप रहब बड़का युग-धर्म किंवा कायरताक प्रतीक
के करत निर्णय समय-सत्यक अतिरिक्त ?
किएक, किएक ई निर्वाचन, लाठी हाथे राउत बेमाक, आश्वासन
पर आश्वासन
किएक अस्पताल, गर्भ-निरोध, खादी ग्रामोद्योग, मुखियाक
चुनाव, ग्राम पंचायत
किएक 'अधिक अन्न उपजाओ'क बोर्ड,
किएक राशनकार्ड, किएक टैक्स, किएक २०,००० करोड़ रुपैयाक
विदेशी कर्ज
किएक सेक्स, ब्लूफिल्म, सैंसर बोर्ड
किएक बंगला देश, बिहारी मुसलमान, वियतनाम, ब्लड बैंक, अनुदान
किएक दू या तीन बस, गर्भपात कानून, निरोध, पिल्स या लाल तिकोन
किएक ई ध्रुवीकरण, निक्सन आ माओ—
किएक इन्दिरा, आत्म निर्भरता, गरीबी हटाओ
किएक हम, किएक अहाँ, किएक ओ—सभ फूसि, फ्रॉड, कैंसर
धीया-पूताक खेल, कनैत नेनाक हाथमे
लट्टू दए फुसलयबाक उपचार, गरीब जनताक संग बेरि-बेरि बलात्कार।
❑

पूजा-गृह

पसरल अछि खण्डित मूर्त्तिक भग्नावशेष
चहुधा गन्हाइछ धूमन आ अगरबत्तीक धूम
अश्रुगैसक संग, सड़ल-गेन्हाएल व्यवस्थाक तरमे
मरि गेल मनुक्ख नि:शब्द, चेतना हुकहुक करैछ
लाल फीताक गीरहमे कस्सल
अनेकानेक सर्वनाम
हम अहाँ ओ
छिड़िआएल
उपस्थित अछि—किछु मांसल बांहि
गुदगर पीठ, पयर आ आँखि देशी कुकूरक बीच
किछु बीतल दिन काटल मुर्गी जकाँ छटपटाइत
जाँघ आ छाबा
चुनावमे पराजित उमेदवार जकाँ टूटल विकलांग
देवीसभक ठोर
छिड़ियाएल मोतीक दाना जकाँ सेठक तिजोरीमे बन्द
आंगुरक समूह

निर्वाचनक बाद नेतासभक आलमारीमे—

सजाओल गेल झकझक करैछ

तराशल स्तनक पाथर–मासु मित्र–देशक मध्य छिड़ियाएल

शिवलिंगक मध्य भाग

महायोनिक अग्र भाग

विभिन्न मुद्रामे अछि ठाढ़ शांत–हमरा लोकनिक प्रतिबिम्ब!

❑

चारि लाख बानरक बीच

चारि लाख बानरक बीच उपस्थित हम
गौरवान्वित भऽ रहलहुँ अछि आइ मंच पर ठाढ़ गर्दभ–स्वरमे
प्रस्तुत कएल जाइछ आत्म–प्रशंसाक गीति–नाट्य
हमरा चारू भर ठाढ़ अछि किछु बानर धूर्त, चाटुकार
किछु हनुमानसभ कए लेने अछि मंचपर अधिकार
बाँटल जाइछ नारीक नाभि–कुंडक अगिनमे भूजल
भाषा आ साहित्यक करेजी, पियाओल जाइछ जबर्दस्ती
भाषणक चासनी, पोटासियम साइनाइट
कार्यक अपेक्षा कएल जाइछ भोजन आ भाषणक अधिक आयोजन
उगाहल जाइछ चन्दा गरीब लोकक पेट काटि आ
सांस्कृतिक अनुष्ठानक नामपर कएल जाइछ विकृतिक प्रदर्शन
बानर भेल बानर, हल्ला मचि जाइछ
डूबि जाइछ अन्धकारक महासमुद्रमे सभागार आ एकटा कोनो
हुरार सभक पेटमे पैसि पीबए लगैछ लाल शोणित टहटह,
लिपेस्टिक रंजित ठोरक दाग
पाया सभमे अंकित भऽ जाइछ। बच्चासभक क्रंदन–स्वर
पहुँचि जाइछ पंचम पर, होमए लगैछ अनघोल, फुजि जाइछ सभक ठोर
दर्शकसँ बेसी व्यवस्थापकसभ करए लगैछ शोर
मोन भऽ जाइछ उताहुल प्रतीक्षा करैत, जेना
कोनो 'टाइम बम' फुटबाक प्रक्रियामे देबाल घड़ी दिस देखैत

मुदा नहि उठाओल जाइछ पर्दा सरिपहुँ,
प्रसारित कएल जाइछ माइक पर
क्षमा-याचनाक स्वर, शांत भऽ बैसबाक लेल
कएल जाइछ प्रार्थना, धैर्यसँ रहबाक लेल देल जाइछ आश्वासन
मुदा तैयो पर्दा नहि उठाओल जाइछ उपर
'शांत, शांत रहैत जाउ
कन्या सभ कपड़ा खोलि शीघ्रहि आबि रहल छथि मंचपर'—
कएल जाइछ एकटा भयानक विज्ञप्ति,
वक्ताकेर अज्ञताक प्रतीक, आ चारि लाख बानरक आँखि
पर्दामे सटि जाइछ, चिम्पैंजीसभ उछल-कूद करए लगैछ।
ग्रीन रूमक मध्य उसनल आलू जकाँ
अभिनेता-अभिनेत्रीसभ प्रेसर कूकरमे सीझए लगैछ, पोछए लगैछ
माथक पसेना, बहए लगैछ गालक रूज़-पाउडर निरन्तर सत्य प्रत्यक्ष नाङट
भए ठाढ़ भऽ जाइछ
तैयो पर्दा नहि उठाओल जाइछ उपर, मात्र पार्श्व संगीतक रूपमे
गरीबनाथक गीत-स्वर सुनाओल जाइछ, डाहल जाइछ इतिहास
आ एहि तरहें चारि लाख बानरक कएल जाइछ विसर्जन
छीटल जाइछ प्रसादक रूपमे सड़ल-गेन्हाइत संस्कृतिक खाद,
बाँटल जाइछ सरकारी आश्वासनक चन्द्रोदक
भला बानर की जनलक अछि आदक स्वाद ?
❑

अपन लोकवेदक नाम

जी, हम छी महान पापी, पतित छी
हम, जे अपन माटि-पानिकेँ आन लोकक सोझामे
करैत छी नाङट, बीच चौबट्टीपर
अपन लोकवेदकेँ करैत छी उघार। हम ओहि देशक लोक,
ओहि इलाकाक रहनिहार जतुक्का लोक
भऽ चुकल अछि आर्थिक दृष्टिएँ फोंक, शरीरसँ लचार
पोलियोक शिकार!
जकर अधिकांश लोक अछि बोनिहार, मजदूर आ गरीब किसान
किंवा भनसिया, रंडीक दलाल, रिक्शा वा ठेला चलौनिहार, झाखा उबनिहार
ट्राम वा बसक कण्डक्टर, टैक्सीचालक, दरिद्र पुजारी, जूता पालिश कैनिहार
ट्यूशनिया मास्टर अथवा
कस्बा, नगर, महानगरक विभिन्न कार्यालयमे काज करैत
मक्खनवाजीमे निष्णात किरानी,
हम अपवादक चर्च नहि करैछ, अधलाह मनबाक हो तऽ मानी!

जी, हम छी महान पापी, पतित छी
हम, जे करैत छी प्रेम अपन लोकवेदसँ, मरैत छी

अपन माटि-पानिक सुगन्धि पर, रहैत छी बेहाल
ओकर दु:ख-दर्दक कथा सुनि। मुदा घृणा होइत अछि हमरा
निष्क्रियताक महासमुद्रसँ
समुद्रमे बोहिआइत ओहि आक्टोपससभसँ
जे सीता, आयाची, मण्डनादिक प्रशस्ति गीत गाबि,
विद्यापतिक 'नेम प्लेट' कपारमे साटि
भरैत अछि एखनहुँ अपन पेट, कमाइत अछि सहस्रो टाका
पोर्नोग्राफी विषयक पोथीकेँ बेचि
जुरबैत अछि अपन करेज। जे सुंघबैत अछि शिक्षित-वर्गकेँ
शालीनताक क्लोरोफार्म
आ सम्पूर्ण जन-चेतनाकेँ बनबैत अछि सुन्न, निष्प्राण। जकर
दिशा-निर्देशक यंत्र गेलैक अछि कतहु हेराय
आ लए रहलैक अछि जल-समाधि, प्राण अछैत
जकर जन-समुदाय!

जी, हम छी महान पापी, पतित छी
हम, जे ओहि देशमे रहैत छी जकर नब्बे प्रतिशत लोक
एखनहुँ अछि भुतिआइत
अशिक्षाक महा अन्धकारमे भऽ निरुपाय,
जकर लोक मातृभाषाक संग करैत अछि बलात्कार
अन्धाधुन्ध--बुद्धि आ विवेककेँ कए खून
जकर अधिकांश शिक्षित लोक

विदकाबए लगैत अछि मुँह, मातृभाषाक नाम सूनि
किंवा कुकूर जकाँ लगैत अछि किकिआय
जेना ढारि देने होइक क्यो इन्होर वा बरकैत कांचक भट्ठीमे
देने होइक धकिआय। जकर पढुआ बाबू आ नुनू
तमशयला पर हिन्दीमे पढ़ैत छथि गारि
जकर अधिकांश शिक्षित युवक
हिन्दीएमे लिखैत छथि पत्र--जखन मोन पड़ैत छनि पत्नी वा सारि
जकर लोकवेदकेँ एतबो नहि छैक बुझल
जे ओकर मातृभाषा की थिकैक ? जी, हम ओही देशक छी रहनिहार
जतुक्का लोक अपन पेट काटि
खेत किनबाक पाछाँ रहैत अछि बेहाल, अपने मडुआ-काउन खाए
लगबैत अछि लगानी, कहबैत अछि धनिक
जकरा नहि अबैछ किछुओ काज, धन-बीत
जे बिनु भोगनहि मरि जाइछ, मुदा रखैत अछि वाणिज्य-व्यापारसँ
छत्तीसक सम्बन्ध,
जे बनियौटीकेँ बुझैत अछि सभसँ निषिद्ध कर्म
आन-आन जाति वा देशक लोकसँ
सम्बन्ध स्थापित करब, जकरा नहि पड़ैछ पसिन्न।
जतुक्का अधिकांश लोक
मनुक्खक मेलामे, युवकसभक करैत अछि क्रय-विक्रय खुलेआम
के सुनैत अछि कन्याक पिता केर क्रन्दन ?
कतए गेल सीताक अभिमान?

साइत मरि गेल छथि भगवान!
जतुक्का लोकसभ आँखि मूनि
करैत अछि काज—नहि सोचैछ परिणाम नीक वा अधलाह
'जे हेतैक देखल जेतैक'—सैह रहैत छनि चाह!
जतुक्का नेता भोटक बाद दर्शन नहि दैछ,
जाति, टाका आ लाठीक बलपर जतए लोक विजयी होइछ!

जी, हम छी महान पापी, पतित ची हम
जे अपन लोकवेदक शिकाइत करैछ,
जकर बाल्यावस्था भीख मांगि जुआन होइछ
आ जवानी चाकरी करैत-करैत बुढ़िया जाइछ
जतए गुलाब सनक स्निग्ध मुँह
आ आमक फॉक सनक आँखि रौदमे गोइठा बिछैत
चूल्हि फुकैत किंवा मर्यादाक देबाल तर पिचाकए समाप्त भऽ जाइछ।
जतए पुस्तकधर्मी आंगुर
बासन मजैत-मजैत खिया जाइछ
जतए लोकक धर्म कर्म-काण्डक कोप भवनमे बन्द
भेड़िया धसानक धर्म बनि जाइछ,
जतुक्का लोककेँ क्लीव, नपुंसक जानि
युवककेँ मौगियाह मानि
सरकार भाँजैत अछि दुरंगी नीतिक तरुआरि
जतए क्रांतिक तऽ कथे कोन, कोना करत मारि?

जी, हम छी महान पापी
हमरा अपन देश, अपन धर्म आ अपन सरकारसँ अछि असर्धा,
पतित छी हम, कारण अपन माटि-पानिक सुगन्धिसँ अछि मोह
हम अपन मायकेँ देखए चाहैत छी मुक्त,
सम्मानयुक्त
लोकवेदक मुँह पर देखए चाहैत छी हँसैत गुलाब,
आँगन-आँगनमे देखए चाहैत छी होइत पाबनि-तिहार।
जी, हम छी महान पापी, पतित छी हम!
❑

नक्सलाइट

प्रात:कालीन सूर्यक लाल किरिन
आदेशित कएलक अछि हमरा प्रतिदिन
उठबाक लेल ललकारा पर ललकारा—प्रदान कएलक अछि
अन्धकारसँ लड़बाक लेल चमचमाइत तरुआरि
आ स्वयं मिसाइल्स बम बनि
करैत रहल अछि विश्व-युद्धक घोषणा,
प्रत्युत्तरमे हमर हृदय भरि गेल अछि बेरि-बेरि
घृणा, दु:ख आ नपुंसक क्रोधसँ
लाखक लाख सूगर
किकिया उठल अछि खोपसँ बहरयबाक मर्मान्तक यंत्रणामे
थुथुनसँ एक-दोसरकेँ सुँघबाक प्रक्रिया,
जीभसँ देहकेँ चटबाक रति-क्रिया भऽ गेल अछि व्यर्थ
मदनोत्सव बनि गेल अछि, जुलूस प्राय:
सभ बेर कांचक चूड़ी जकाँ
चनचना कए टूटि गेल अछि माय-बहीनक सम्बन्ध
आ हम
कोशिश कएलहुँ अछि सुरजा नक्सलाइटकेँ पराजित करबाक लेल
कोनहुना मड़ुआ रोटीसँ गँहीर खाधिकेँ भरि
सूति रहलहुँ अछि आन्तरिक योनि-विवरमे
अनन्त कालक लेल निन्न भेर।

पत्नी-परिवार, लोक-वेद सभकेँ सूचित कए
हम चल गेल छलहुँ काशीवास करबाक लेल
महा अन्धकारक बीच
दाल मंडीक गंगा-प्रवाहमे भेटल छलाह
पंडितजी शिवलिंगक पूजा करैत। घाट पर वेश्याक साड़ी फिचैत
भेटल छल रमखेलौना ब्लीचिंग पाउडरसँ शोणितक दाग
छोड़बैत। दर्दसँ छटपटाइत, खूनसँ लतपथ भेटल छलीह
निवस्त्र भेलि पड़ल चाँदीक तोशक पर बिन्दा, सीता आ कमलमुक्खी
आ हम, हम गंगा-स्नानक पुण्य-फलक लोभमे
डूबैत चल गेल छलहुँ
अन्धकारक अन्तस्तलमे मेटा देने छलहुँ अपन अस्तित्व
मुदा किएक हमरा उठाओल ?
के थिकहुँ अपने ? —आह!

❑

विद्युत-चाप

भूखक दुर्दान्त समुद्र। भरत कोना ईंट-पाथरसँ ई खाधि ? आश्वासन, स्नेहक चासनीमे बोड़ल खाजा-मुंगबा कतेक दिन धरि चलत। मालभोग चाउरक भातक संग कहिया धरि खाइत रहब बाप-दादाक खुनाओल पोखरीक रोहु माछ। चुसैत रहब भाकुरक मूड़ा। जमीरी नेबोक स्वाद कखन धरि ? कहिया धरि स्त्रीक गहनाकेँ बन्धकी राखि चलि सकत एतेक पैघ परिवार। ट्रैक्टर, पंपिंग सेट आदिसँ कएने रहू परहेज। हे बथान-सोधन। अकाल दाहीसँ मारल खेतमे चलबैत रहू हर जीवनपर्यन्त। बरदकेँ टिटकारी दैत रहू। सुखायल बीयासँ नहि फूटत धानक मोहार। माय-बाप कतेक भिनसर-साँझ करैत रहताह मनिआडरक प्रतीक्षा ? कखन धरि खोधैत रहतनि महाजन शरीरक मासु ? कागत-पेंसिलक अभावमे भाय-बहीन कहिया धरि खाइत रहत मास्टरक मारि। सुनैत रहत गंजनि। फीसक तगादा-पर-तगादा.......। मातृभाषाक पोथिक अभाव। बच्चासभ रटैत रहत आन भाषाक कविता-गीत। गदहाकेँ बाप कहैत रहत भयभीत।

रवि, सोमवारी वा देवोत्थानक एकादशी नहि मेटि सकत ई भूख। दिन-राति भगवतीक सीर निपलासँ नहि चल औतीह घरमे छुतहरिया लक्ष्मी। नहि चलत एहि कर्म-युगमे मंत्रक जाप—'धन-धन लक्ष्मी घर आउ; दारिद्र्य बहार होउ'। पंचदेवोपासक रहलो उत्तर नहि भेटत एहि निष्क्रियतासँ मुक्ति। लाख करू सत्यनारायण भगवानक पूजा, शिवलिंग पर ढारैत रहू लोटाक लोटा दूध, मुदा आओत नहि एहि मृत जातिमे चेतना। हएत नहि शरीरमे कोनो प्रकारक स्पंदन। वर्षा नहि होएत। नहि फुलायत सहस्त्रदल कमल। भावनाशून्य लोक अपन स्थितिक नहि कए सकत कहियो अनुभव। कतेक काल धरि जिया सकत कोरामिनक इंजक्शन ?

करैत रहू हे नव विवाहिता तीज, पुजैत रहू हाथी पर चढ़ि गौर भिनसर-साँझ। मुदा नहि जीताह अपनेक कोकनल पति बेसी दिन। विटामिनक अभाव। खूनक कमी। ब्लड बैंक नहि बनि सकत अपनेक शरीर। खाहे सौंसे समाज भऽ जाउक संक्रामक रोगसँ बेमार। अङ्ग-अङ्ग मे भऽ जाउक कोढ़ि। सिफलिस-गनोरियासँ सड़ि जाउक जनेन्द्रिय किंवा गुप्तांग। भऽ जाउक सम्पूर्ण युवा वर्ग ल्यूकीमियाक शिकार। मुदा नहि देखाओत, किन्हहुँ नहि देखाओत डॉक्टरकेँ ओ अङ्ग। उपचार

नहि कराओत। लेखक जौं उघाड़ि देलकैक ओ अङ्ग हरविर्रो मचि कए रहत। नीतिक कंठीसँ अश्लीलताक होमए लागत जाप। शालीनताक नाम लोक पिबैत रहत घावक पीउज। नाक दबने रहताह वृद्ध, देहक राजनीति चलैत रहत। युवक उत्तान भऽ पड़ल रहत संज्ञा-शून्य। खाहे दैत रहियौक ओकरा मस्तिष्क पर बेरि-बेरि विद्युत-चाप (Electric Shocks), पठबैत रहियौक सेनिटोरियम, मुदा नहि बिसरत अयाची, वाचस्पति, मंडन, विद्यापतिक नाम। भूतजीवी लोक। तोड़ि नहि सकत अपन परम्पराक देबाल। सड़ल संस्कृति अथवा पूर्वजक मिथ्या गौरवक 'लेमनजूस' चूसैत रहत। धर्मकेँ नेनाक जूजी जकाँ तिरैत रहत।

सरकार अछि हक्कलि डाइन। संघारि लेत एक दिन सभ केँ जौं नहि भेलहुँ कनियो सचेत। केओ होउक— बड़का अथवा छोटका नेता। जखने औता', किछु-ने-किछु खेता'। उठता किएक—जन-गन-मन अधिनायक जय हे मिथिला भाग्य विधाता!

❑

छापामार युद्ध

आउ, आउ हे नव युग-निर्माता! आउ
अपन कोकनल जिनगीसँ बहराउ, अपन
पीताम्बरी देहकेँ बेल तर गाड़ि, राति भरिक
विश्रांतिक चादरिकेँ उघारि
यैंठायल थारीकेँ भोरुका किरिनसँ पखारि—आउ,
आउ हे कोटि जनक भाग्य-विधाता! आउ

भिनसुरका रक्तवर्णी ओस, बैसल अछि हाट-बजार
घर-आँगन, चर-चाँचर, नदी-पोखरिक मोहार
कमलमुखी कन्यासभ भेलि अछि पीताभ, शक्तिशाली
पुत्र बैसल काज बिनु चुपचाप, पिता
भेला' असमय वृद्ध, मातामहीकेँ नोचि रहल
समय केर गिद्ध। रौदी-दाहीसँ गृहस्थ बेहाल,
सरकारी कर्मचारीसभ उड़ा रहल माल।
बीझ लागल तरुआरिपर शान चढ़ाए, गोरिल्ला
युद्धक डंका बजाए—आउ,
आउ हे छोटका-बड़का सभक प्रिय नेता। आउ

सेनुरसँ भरल नवविवाहिताक सीथ, बन्दूकसँ सज्जित
युगल कर स्त्रीक। कोनो
बिजली कारखानाक बम्मासँ बहराइत
कारी केश-राशि, जरैत स्टोव सनक आरक्त
मुखाकृति, प्रेस्टिज कूकर जकाँ सुसुआइत
कोनो बौआसिनकेर कंठ—नारी जागृतिक शंख
बाजि रहल घर-घर
मातृसत्तात्मक राज्य। पुरुष भऽ रहल
कापुरुष। ने ककरो किछु ग्लानि।
युवकमे कहाँ अछि पानि ? नूआ-लहठीकेँ त्यागि
पुरुषोचित काजकेँ सम्हारि, नव घर उठाउ, पुरान घर खसाउ-आउ,
आउ हे नवताक जन्मदाता! आउ

अशिक्षाक अन्हरिया राति, पसरल अछि चहुधा
शत्रु देशक जाल, अर्थक सर्वथा अभाव
बिकाइत अछि माटि सोना केर भाव—ऐतिहासिकताकेर सन्दर्भमे
कहियाधरि तकैत रहब बाट ? घाव पकबामे अछि विलम्ब,
तैं कि नहि करब शीघ्र एकर अन्त ? अन्यायीसँ बेसी
अन्याय सहयबला होइछ घातक लोक, की लाभ
कएलासँ शोक, व्यवस्थाक अंत
स्वतः स्फूर्त विस्फोटसँ होइछ,
गोइठाक आगि जेना

सहजहि सुनगैछ। सरकार सुनैत छैक
बस गारिक भाषा, ओना लाख कहियौक—
नहि होएत पूर्ण आशा। भण्डार-गृहकेँ
आर्डिनेन्स फैक्टरी बनाए, बम, मशीनगन
शॉटगन, राइफल, रिबाल्वर घर-घर पहुँचाए—
सभकेँ छापामार युद्धक रण-नीति बुझाउ—आउ,
आउ हे नव-क्रान्तिक प्रणेता! आउ

❑

शून्य काल

अनिर्णयक एहि क्षणमे हम
ककर बाट ताकी, ककरा शोर पारी
ककरापर करी विश्वास—जहन कि हम नहि जनैछ
जे कतए हेरा गेल अछि हमर पुरोधा कवि, कतए—
कतए चल गेल अछि युगचेता इतिहासकार, किएक
पड़ल अछि बुद्धिजीवी निष्क्रियताक बाटपर
संज्ञा-शून्य
रोटी कपड़ाक व्याज किएक बेचि रहल इमान ? लेखक
कोनो गाछक छाहरिमे जाएबाक लेल परेशान, कोनो
झंडा, कोनो कुर्सीकेँ हथिएबाक लेल अपस्याँत
हमर नेता, व्यक्तिगत स्वार्थक आगाँ
राष्ट्रीयताकेँ मारैत लात शीश महल उठएबामे व्यस्त
हमर मंत्री—काजसभ पड़ल जकथक, निरुपाय
जनता ठाढ़ कलबल नेताक भाषण खाइत, अखबारक पन्ना
चटैत, आश्वासनक पानि पिबैत—चोरबजारी,
कारीधनक इन्क्वायरी। राजनीतिक प्रक्षेपास्त्र—
लठैती, बैमानी, सीनाजोरी। दिन-दहाड़े भऽ रहल
डकैती आ चोरी। नेताक मोट चाम,
बिका रहल देशमे गुण्डासभक नाम

फीता आ फाइलमे बन्द देशक वर्त्तमान, भविष्यपर
खेला रहल फाटका निमकहराम। गाममे चकबन्दी,
जमीन दाखिल करबाक उत्सवमे शामिल
अफसर, अमीन, मुखिया आ कर्मचारी—घूस देबाक लेल
बन्हकी लोक राखि रहल
लोटा आ थारी। खच्चर व्यवस्थाक महाजाल
यथास्थितिकेँ कायम रखबामे
व्यस्त दलाल। कहियाधरि ठनठनी,
कहियाधरि शान-गुमान—उठब की तखन
जखन निकलि जाएत प्राण ?
❑

नव घर उठे : पुरान घर खसे

छोड़ू सरकारसँ प्रार्थना करबाका काज
छोड़ू मिनिस्टरक चापलूसी, भ्रष्ट
राजनीति
आ त्यागि दीअ जनताकेँ पोल्हएबाक भाषा
समझौताक रण-नीति
गरीब लोककेँ आर गरीब बनएबाक अभियान
एहि सभकेँ देखि
छटपटा रहल अछि हमर प्राण
आ
तड़पि रहल अछि
नवतुरियाक आत्मा
चीत्कार करैत हजारो वर्षक इतिहास
एतहि कतहु हेरा गेल अछि।
सम्पूर्ण क्रांतिक आगि
बन्द भऽ गेल अछि किछु
समझौतापरस्त लोकक मुट्ठीमे
आ
संसद भवनमे एखनहुँ अष्टयाम
आओर
संकीर्तन चालू अछि।

मिथिला
अपन प्राचीन गौरव-गरिमासँ अछि सम्पन्न
अपन दरिद्रताक चादरि ओढ़ने
एखनो अछि जीवित
मूइल नहि अछि
विद्वानलोकनिक अनुसार।
मुदा कतए गेलैक ओकर छः कोटि हाथ
ओहिमे अणु-परमाणुक सूर्यमुखी फुलएबाक छैक ?

दिनचर्या बदलू अप्पन,
नेताक कब्रपर चापलूसीक फूल चढ़ाएब छोड़ू
प्राचीन कार्य-पद्धतिकेँ बदलू
करू अपन भूलक सुधार
गपध्याकेँ त्यागू
बदलि दीअ अपन आँखिक सोझामे
अपन बाप-पुरखाक बनाओल नियम-कानून
गन्हाइत आचार-संहिता
ढाहि दीअ नोंनी लागल देबालकेँ
अशिक्षा
गरीबी
ई
अन्हरिया
उर्ध्वश्वास
आ
ई
पछिला पाप आ अपराधक स्मृति

भोंकि रहल अछि छूरा हमरा पीठमे
आ
मायक छातीमे।

जेबाक तऽ अछिए हमरा
अपन लोकवेदक बीच
एक-ने-एक दिन
अन्ततः
मुदा
एतेक धूर्त, चाटुकार, बैमान आ नपुंसक
सहयोगीक संग कोना पहुँचब अपन लक्ष्यधरि ?
तखन
स्क्रीनिंग करहे पड़त,
बच्चा-जवान, स्त्री-पुरुष सभकेँ राइफलक
प्रशिक्षण देमए पड़त
सोझे
लड़बाक साहस किएक नहि अछि अपनेमे ?
कहिया धरि बनल रहब : बरोक माय,
कनियोक माय
गनगोआरि साँप बनलासँ काज नहि चलत!
पार्लियामेंट चलैत रहत,
भंग होइत रहत आ प्रत्येक सत्रक पूर्व
देल जाएत अपनेकेँ
आश्वासन पर आश्वासन
मुदा अगिला सत्रमे रद्द कए देल जाएत
अपनेक प्रस्ताव

अहाँ हाथ मलैत रहब
खैनी चुनबैत रहब
अपन दिल्ली यात्राक बखान लोककेँ सुनबैत रहब।

हमरा मोन होइछ
जे तीन करोड़ तड़पैत आत्माक माला बनाए
पहिरा आबी एक दिन
इन्दिरा गाँधीक गरदनिमे हजारक हजार
भूखल, नाङ्ट, बेमार लोकक हाथ
आ
लाल करेजीसँ भरल तस्तरीकेँ
ओकरा डायनिंग टेबुलपर सजा आबी।

अहाँ अपन निन्नकेँ तोड़ू
निष्क्रियताक आदतिकेँ बदलू
कारण एक बेर जौं आदति पड़ि जाइछ
ओहिमे परिवर्तनक संभावना
बड़ कम होइछ!
जे प्रवहमान अछि, स्वच्छ रहत
रुकला सन्ता
आबि जाइछ ओहिमे दुर्गन्धि
खाहे ओ पानि हो वा मनुक्ख।

दण्ड सभकेँ भेटबाक चाही
खाहे ओ धनी हो वा गरीब
मंत्री हो वा सरकार

बिड़ला हो वा कलुआ चमार!
हमरो दण्ड दीअ
जौं हम अपराधी होइक
हम सभ यातनाकेँ सहब सहर्ष
एक बेर आह तक नहि करब
यातनाकेँ जे सहन करैछ
ओएह यातनाक विषयमे निष्पक्ष विचार दऽ सकैछ

हम
आ हमर पीढी
समस्त नवतुरिया वर्ग
जे माथमे मृत्युक अंगोछा बान्हि
बढ़ि रहल अछि आगू
ककरोसँ भय नहि करैछ।
इजोत जतबा हो उपलब्ध
सभकेँ भेटबाक चाही बरोबरि
प्रत्येक स्थितिमे
घुसखोरी आ कालाबजारी होएबाक चाही बन्न
जिनक उखड़ि गेल होनि पयर
ओ किन्नहु हमरा संग नहि आबथि
बीचमे पहाड़ जुनि बनथि
कारण
हमरालोकनि
पहाड़सँ टकरएबाक साहस रखैछ
प्रत्येक घावक शल्य-चिकित्सा
नीक जकाँ जनैछ।

आगि आ मृत्यु
ककरो कहियो धोखा नहि दैछ—
जिनका ई होनि ज्ञात
ओ आगू बढ़थि
जिनक मोन होनि घबराइत
पयर होनि कँपैत
ओ नहि आबथि
हमरा संग
किन्नहु नहि आबथि।
एतुक्का सभ नेता
मड़ुआक भाव भोट बटोरि
घर-घर बहुरंगी योजनाक नक्शा बाँटि
सम्मिलित भऽ गेलाह अछि
प्रीतिभोजमे
आ
दिल्लीसँ बुढ़बा आँगुर देखा रहलाह अछि
सोल्लास
दुष्टताक हँसी
जहर बनि पसरि रहल अछि चहुधा
क्लोरोफार्म मिश्रित गैस
लोक काटल छागर जकाँ छटपटा रहल अछि
निरुपाय।

आखिर कखन धरि दबल रहब
हमरालोकनि
आश्वासनपर कखनधरि रुकल रहब

आ कतबा काल
'गोदो'क प्रतीक्षा करैत रहब ?
ओ नहि आओत,
ओ काहियो नहि अबैछ।
हम चाहैत छी
जे हमरा एक हाथमे हो ऐना
आ दोसरमे हो बम
जे ऐनामे अपनाकेँ नीक जकाँ देखि सकी
पहचानि सकी
अपन लोकवेदक मोन
आ
अपना दुश्मनक कए सकी सामना सदिखन।
मुदा छीनि लेल गेल अछि हमर भाषा
सीबि देल गेल अछि मुँह
कोना सुनाउ कविता
बाँचल अछि हाथमे, एक्केटा हथियार
कलम।



एक आओर नर्कमे धकेलल जएबाक नाटक

सभ दिन सीढ़ी उतरैत छी मुदा
नर्क खत्म नहि होइछ, एक आओर नर्कमे
धकेलल जएबाक नाटक मंचस्थ कएल जाइछ
नित्तहु। हमहूँ अपनेक संग छी पड़ल
ओही गलफड़मे, जतए
एककेँ उतारल जाइछ आ दोसरकेँ चढ़ाओल जाइछ
दाँतक नीचा!

विजयाक एहि उल्लासिनी रात्रिमे
के टेरि रहल अछि उदासीक एकटा गीत? के लिखि रहल अछि
मृत्यु-पत्र कचनारक कोमल पुष्प पर? मुस्काइत ठोर पर
खिलखिलाइत मुँह पर कें ढारि रहल अछि इन्होर
आशव-पात्रमे के मिला रहल अछि जहर
विजयोल्लासक एहि क्षणमे हमरा मुक्ति चाही!
हमरा मुक्ति चाही!!

पाप-मुक्तिक लेल अमर्यादित हएब
अनिवार्य प्रार्थना थिक। माय आ मातृ-भाषाक मुक्तिक लेल
जान देब पहिल कर्त्तव्य थिक। दुश्मन हो बाप
तऽ ओकर मुँह तोड़ब

नवताक पहिल शर्त थिक। तैँ कतएसँ उघारू,
प्याउजक खोइचा जकाँ एहि व्यवस्थाक खोल,
कोना तोड़ू ई जातीय संस्कार कि खण्डित भाषा
बनि सकए एकटा आवृत्ति। एकटा हथियार,
एकटा मार्ग।

जानब आवश्यक अपना संग अपन शत्रुकेँ
आ अहाँ लड़ि सकैछ एक सए युद्ध निर्द्वन्द्व,
बिना कोनो असफलताकेँ एक संग। तैं आउ,
एक जुट्ट भऽ लिखल जाए अग्नि-पत्र सभ वस्तुक विरुद्ध
व्यवस्था, सरकार, राजनीति, पटना आ दिल्ली—
सभक खिलाफ लिखल जाए प्रार्थना-पत्र
आ प्रमाण-पत्र देखा-देखा कए बेचल जाए
बनि कए निर्लज्ज थूक फेकल जाए। धरनिया,
अनसन आ आत्मदाह कएल जाए। बहुत दिनधरि रहलहुँ
अपनेक अन्हरजालीमे, बहुत दिनधरि झँपने रहलहुँ
देह प्रजातंत्रक केथरीमे—मुदा आब,
आब हमरा ज्ञान नहि
नौकरी चाही। उपदेश नहि, काज चाही। मात्र काज,
आओर किछु नहि.......किछु नहि, किछु नहि।

किकिआइत कुकूरक प्रति बन्दूकसँ खेलाइत

सावधान!
लोक हल्ला करए वा सूतल रहए चुपचाप
अथवा व्यवस्थाक संग
हँ-मे-हँ मिलाबे अथवा चापलूसीक रबड़ी खाएबा
आ समझौताक शीश-महल बनएबामे हो व्यस्त
ककरोसँ जुनि डेराउ
परवाहि नहि करू ककरो
कारण ओ जहिना अछि तहिना रहए चाहैछ
यथास्थितिकेँ कायम राखए चाहैछ
—ओ
नहि चाहैछ जे जड़ता टूटए
मोह-भंगक अवस्था आबए
—अहाँ
लड़ू अपन रचनाकेँ हथियार बनाए
भाषाकेँ तरुआरि बना कए भाँजू
ध्वस्त करू उल्कापात बनि निष्क्रियताक संसार
सुप्रभातक लेल

खबरदार!
देखू क्यो भागए ने पाबे, मिझड़ा ने जाए
भेष बदलि अपनेक वर्गमे

सभ छोट-मोट नर-भक्षी
एक जुट्ट भए
लागल अछि कतल करबाक ओरिआनमे
देशमे विदेशी मुद्राक संकट आ
चीनी आक्रमणक हल्ला
अकाल-घोषणा आ नक्सलपंथीक हत्या-कानून
—सभ
चलि रहल अछि एक संग आ
गरीबी हटएबाक विज्ञप्ति
आब अखबारे धरि रहि गेल अछि
—सि
कु
ड़ि
कए
हबाई दौड़ापर मंत्री
गरजि रहल अछि माइक पर सभसँ बड़का डकैत
ओना देशक सभ चोर-डाकू आत्मसमर्पण कए चुकल अछि
प्रजातंत्रक लेल

होशियार!
हम जनैत छी जे ओ कोनो ने कोनो तरहेँ
धरा देत अहाँक हाथमे विद्रोहक झंडा,
आगू धकिया देत
आ स्वयं विद्रोह रोकबाक व्यवस्था लेल
नरभक्षी दलमे मिलि जाएत

मुदा नहि, ई किन्नहुँ नहि भऽ सकैछ
—अहाँ
पहाड़ बनि टूटि पड़ू
गुलिवर बनि फाड़ि दीअ ओकर छाती
आ व्यवस्थाक प्रति विद्रोहक स्थानपर नकारि दीअ
ओहि व्यवस्थाकेँ, जकरा ओ व्यवस्थाक संज्ञा दैछ
—युवा-वर्गक लेल.........
❑

विष्णुर्योनिम्

ओछाओन
ठोर
लिपेस्टिक
गोल
कठोर
स्कर्ट
उपर
रेशम
मोलायम
तीतल
पैंट
फूजल
कठोर
भीतर
दर्द
जोर
मीठ
उपर
नीचा
निःश्वास
भीजल
परमानन्द
लरगुज
बाहर
मरल
मूस

❑

युद्ध

बड़ आवश्यक अछि लड़ाई करब
हमरा–हुनका झगड़ब
एतेक पैघ अन्तराल
गहींर खाधि
युद्धक बादे भरि सकत
मरले सन्ता अधिकार भेटि सकत

❑

अपराजेय

हे भगवान!
अहाँकेँ नहि कहियो मानल
तैं सपनामे पेना लऽ
रहैत छी हमरा खेहारैत
से जे करबाक हो—सभ मंजूर
झुकब नहि
रहत सदिखन सीना तनल।

❑

गतिशीलता

आब हम ओ नहि रहलहुँ
किछु आओर भऽ गेलहुँ अछि आइ
से की यौ ?
ओ आने लोक कहत।

❑

वस्तुस्थिति

मिथिलामे एखन
सिंहक संख्या एक-दू —सेहो पागल
बाघक संख्या से हो तेहने-पतराएल
हिंस्र जन्तुसभ भऽ रहल अछि शेष
सह-सह कए रहल अछि सभतरि कुकूर-बानर
बनौने सिंहक भेष
—से जे होउक, मुदा हमरा एखनो अछि विश्वास :
सिंह एक दिन भऽ जाएत ठीक
बाघक संख्या बढ़त निश्चित
उठत हिंसक जन्तु-फूजत
कुकूर-बानरक पोल
कते दिन धरि चलत आनक खोल ?
बिजुवन फेर मँह-मँह करत,
प्रकाशक दीप एक दिन जरत!

❑

नपुंसक नेताक नाम

हम चाहैत छी अहाँ
गोलीसँ उड़ा देल गेल रहितहुँ से नीक हे मित्र
हम चाहैत छी अहाँ
फाँसी पर चढ़ा देल गेल रहितहुँ
हम चाहैत छी अहाँ
सड़क कातक कोनो बिजलीक खाम्ह पर
लटका देल गेल रहितहुँ
से
बरु नीक

आ कहितियैक हम तखन
मरि गेल जे आत्माभिमानी
लाखक-लाख योद्धा जकाँ हँसैत
अपन मातृभाषाक लेल
से छल हमर मीत।

हम चाहैत छी अहाँ
फोलि गेल रहितहुँ दुआरि
अन्हार गहवरमे ठाढ़ अश्वकेँ कएने रहितहुँ मुक्त
दिशाहीन तीन कोटि मनुक्खकेँ

भेटल रहितैक मुक्ति-पथ पर अग्रसर हएबाक
सुयोग
आगू बढ़बाक युक्ति
अहाँ
कम-सँ-कम चुप रहितहुँ मरणपर्यन्त हे मित्र
नहि कएने रहितहुँ निर्यात
हमर सभ्यता आ संस्कृति
नहि लिखौने रहितहुँ मर्दनसुमारीमे
आन भाषाक नाम
नहि डाहने रहितहुँ लाखक लाख
गरीब लोकक पेट व्यक्तिगत स्वार्थक निमित्त
आ तखन..........हम नहि कहितहुँ
किन्नहुँ नहि कहितहुँ हम
जे हमर इतिहासकेँ बेचनिहार
नहि छलाह हमर मीत।
❑

आइ

आइ हम कतए छी ठाढ़
जोहि रहल छी ककर बाट—से नहि अछि ककरो ज्ञात!
आइ हमर सुन्दर अतीत बाकसमे बन्द अछि, सड़क पर
छिड़िया गेल अछि वर्तमान
आ कुहेसमे बौआइछ एकटा लाल किरिन भविष्य
गाम सूतल अछि निभेर लहाश बनल
शहर घुसकुनिया कटैत, पेटकुनिया दैत
गीड़ि रहल आक्टोपस जकाँ
एक-एकटा लोककेँ प्राण अछैत। तिजोरीमे बन्द इजोत
भऽ गेल अछि विद्रोही-क्रुद्ध,
लोक चाहियो कए किछु नहि कए रहल सरकारक विरुद्ध!

आइ हमरालोकनि अपन मोनकेँ
पोल्हएबाक हेतु, अपन घावकेँ
नुका कए रखबाक हेतु—हवा पिबैत छी, भाषण खाइत छी
आ बेशी रातिधरि जागल रहैत छी
भूखकेँ फुसलएबाक निमित्त। धूर्त्त अछि व्यवस्था
जे लोककेँ पच्चीस वर्षसँ
ठकि रहल अछि नाराकेँ मुहाबिरा बनाए, चाटुकार अछि
प्रशासकीय पुर्जा

जे यथार्थक बदला आदर्शक पाठ पढ़ाए
लोककेँ निष्क्रिय बनएबामे अपने खिया रहल अछि, आई
जनताक सेवक केबिनेटमे भऽ गेल अछि बन्द,
आ बरदक संग हुनक कुश्ती भऽ गेल अछि प्रारंभ
मूस कतरि रहल मौजसँ संविधान,
गाए चरि रहल सौंसे देश खेत आ खरिहान
कोठापर गाबि रहल वनिता, होटलमे कलाकार
बैमान उड़ा रहल मालपूआ, बना रहल मकान
मरि रहल गरिबहा
नित्तह बढ़ि रहल वस्तु-जातक दाम,
झूठ आइ सत्य अछि, टाका अछि युगकेर भगवान
विपटा बनि जीबाक अतिरिक्त
आओर नहि अछि कोनो संकल्प महान!

❑

अपराध

नहि जानि किएक सभ बेर हमरा लोकनिसँ
भऽ जाइछ 'भूल' आर हम
'भूल-सुधार'क क्रममे
एकटा सही व्यक्तिक उधेसमे लागि जाइत छी। अपनेक
पाखण्डकेँ नहि झाँपि
हमरासँ एकटा आर जघन्य अपराध भए जाइछ
हमर महुरायल शब्द
अपनेक आचार-संहिताकेँ विषाक्त कएला पर
कुख्यात अपराधी घोषित कयल जाइछ। एकटा पुरान नाटककेँ
अत्याधुनिक रंगमंचपर प्रस्तुत करबाक प्रयासमे
हमरालोकनि सभ बेर
दर्शकक कोप-भाजन बनि जाइछ, अपनेक शब्द-ज्ञानकेँ
अलकतरासँ पोतबाक अपराधमे
हमरालोकनि घसल अठन्नी जकाँ टलहा सिद्ध कयल जाइ' छी
अपनेक पारम्परिक कानूनक कंठीकेँ तोड़ि,
पुरखाक बनबाओल जीर्ण-शीर्ण मकानकेँ ढाहि
नव घर उठयबाक अपराधमे, नव जीवन मूल्यक स्थापनामे
हमरालोकनि

अगिलत्ती किंवा उच्छृंखल प्रमाणित कयल जाइ' छी
सुतरां
अपनेक पवित्र शब्द-कोश, संविधान
रूप-रङ्ग भेष-भूषा आर महंथीकेँ
अवैध घोषित करबाक अपराधमे, अपनेक हाथी दाँतकेँ
उघारि देबाक प्रयासमे, अपनेक सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ
नकारि देबाक पापमे
हम बेरि-बेरि फाँसी पर चढाओल जाइ' छी
आर हमरा शोणितसँ
अनगिनत बीज अंकुरित होइछ, असंख्य ओरहुल फुला उठैछ! ❑

गिद्ध

पाँखि पसारने उड़ि रहल अछि
आतंक
मुँहमे
मदिरोछ्वासक थूक-खखार भरने
लोइयाक लोइया दोसराक देहपर फेकबाक उपक्रममे
अपने शरीरकेँ गदकिच्चनि करैत व्यवस्था
उघार होयबे करत पेट
नाभिक नीचा दहकैत नेपालक जंगल
पड़पड़ाइत पाकिस्तान
मूल्य वृद्धिक हाहाकारक मध्य गुमसाइन वातावरणमे
चमैनसँ नहि नुकाओल जा सकत—
ढ़ीढ़
लाख चेष्टा कयलो पर्यन्त।

दाँत निपोड़ने खा रहल अछि
गिद्ध
डोमा
रक्त-मज्जा-मांसहीन शरीर लोकक

मृत्युसँ दुर्दान्त शासन-तंत्र
कवलित भऽ रहल मनुक्ख नहुँ-नहुँ होइत
शव-श्लथ-मंद, पिबैत गरल-पात्र प्रसन्नताक संग
भूखक युद्ध होइछ प्रारंभ
तऽ छूटए लगै अछि शब्द बनि बारूद, नेपम बम
तमंचा हाथ बनि जाइछ जखन,
जखन गरदनि दबाओल जाइछ जनताकेँ, सड़ओल जाइछ
भाषाकेँ तखन निश्चय बुझू बनि जाइत—
अछि
नव राष्ट्र बंगला देश।



मुक्ति-संघर्ष

दुःख अहूँकेँ अछि
दुःख हमरो
हमरालोकनि एकटा ढहल-ढनमनायल घरक देवाल तर
पड़ल पिचायल छी, जतए
चिकरलो सन्ताँ चीत्कार
नहि सुनाइ दैछ ककरो......असंभ
हिलब-डोलब
भयंकर होइछ वर्षक वर्ष रहब
पूर्वजक बनबाओल देवाल तरमे पिचायल आ
अनुभव करब डाँरक मर्मान्तक दर्द
हड्डीक टूटब, गन्हाइत मासुक दुर्गन्धिकेँ सहब।

हम जन्म लेलहुँ तखनेसँ
दऽ रहल अछि ई सार कष्ट पर कष्ट, गरदनि पर अछि बैसल
व्यवस्थाक दलाल—सरकारी भतार!
मुँह मारू ओहि प्राचीन गौरव-गाथाकेँ
जे छीनि लेने अछि हमर भाषा, हमर सुविधा
हमर मुँहक आहार
आ गड़ि गेल अछि हमर जिजीविषाक आर-पार
एकटा तेज कील

छातीक खूनसँ लतपथ भेंसा गेल अछि
हृदयमे एकटा इस्पाती फार
मालिक आ समझौतापरस्तक बीच
पिसा रहल हमर अस्तित्व
आ हड्डीक चिक्कस लूझए लेल कए रहल कटाउझ
बानर-बिलाड़िक भीड़
केहन ई मुक्ति-संघर्ष!

हम धधकि रहल छी
शहरसँ गामधरि पसरि रहल छी हम
वज्राहत पयरपर
भयानक नृत्य करैत पार कए रहल छी हम
नदी-नद-पहाड़
टीनक गर्म छत हमर मोन
हाहाकार करैछ सदिखन, हल्ला करैत
हमर कविता, शांति-व्यवस्थाक लेल जहर उगलैत
हमर शब्द, दहकैत तऽब पर
लहकैत रोटीक अर्थ नहि लगैछ ककरो
सभक सभ चुप,
साहित्यकार चुप आ विधायक गोङ
बुद्धिजीवी, चिंतक, नेता निर्वाक
हिनकासभक लेखे दुःख आब ककरो नहि
गरीबीक बात करब मात्र एकटा फैशन!
❑

अग्नि-शिखा

असंख्य तरेगन जकाँ टिमटिमाइत भगजोगनीसभक बीच
उद्दीप्तमान सूर्यक प्रकाश-पुंज—एकटा अग्नि-शिखा
घेरयलो सन्ताँ लहकि रहल अछि राति-दिन
कए रहल सुड्डाह
लोकक पाण्डित्य ईर्ष्या आ स्वार्थकेँ अल्ट्रा वायलेट रेज
कए रहल शल्य-चिकित्सा
समाज-व्यवस्थाकेँ 'आपरेशन-टेबुल' पर सुता कए चित्त
कोनो एकटा मंत्री
कऽ रहल संचालना साहित्य-संस्थानक सोल्लास
कोनो एकटा नेताक उजरा हाथक संकेत पर—प्रतिदिन प्रतिवर्ष
आ प्रतीक्षामे ठाढ़ कोनो एकटा पिता
सुनबाक लेल अछि व्यग्र मृतप्राय पुत्रक समाचार
कोनो एकटा माय कए रहलि प्रार्थना
अपन फटलाहा आँचरकेँ पसारि पुत्रक कुशल-क्षेमक लेल
कोनो एकटा बहीन
पठा रहल अँकुरी लिफाफमे बन्न भैयाक रण-विजयक लेल
कोनो एकटा प्रेयसी
बूनि रहल स्वेटर राति-दिन बिसरल प्रेमीकेँ जीवित करबाक लेल
आ कोनो एकटा पत्नीक कपाड़क ललका टिकुली
उपग्रहमे छोड़ल गेल

‘रसियन सेटेलाइट’ जकाँ काटि रहल चक्कर
कोनटासँ दरबज्जा धरि अपन स्वामीक दीर्घ जीवनक लेल
आ एहि सभसँ फराक
वीतराग-वीतक्रोध
देखि रहल अभिनय रङ्गशालाक एकटा कोनमे ठाढ़
सूनि रहल नेता-उपनेताक कएक सालक रटलाहा भाषण
गूनि रहल अभिनेता-कलाकारक मुद्रा-दोष
भोगि रहल इन्दिरा गाँधीक आकाश छुबैत मूल्य-वृद्धिक चाप
मुदा अपने प्रकाशमे
म्रियमाण सर-समाजक ऊर्जाकेँ धधकति देखि
मूनि लैत अछि आँखि
कान बन्न कए लैछ
तैयो.....तैयो ओकरा सुनाइ दैछ यक्ष्मासँ पीड़ित पिताक खोंखी
मायक आर्त्तनाद आ बहीनक हिंचकी
तैयो ओकरा देखाइ दैछ
प्रेयसीक सुखायल ठोरक पपड़ी आ
पूर्व दिशाक भालपर चमकैत पत्नीक कपारपर
ललका टिकुली चमचम करैत..........



ओकर गाम : ओकर शहर

ओकरा घर पर। होइत रहलैक अछि आक्रमण
अन्धकारक लगातार। पछिला पच्चीस-छब्बीस
वर्षसँ। धुँआधार
खसैत रहलैक अछि बम। अकाल। दाही
अगिलगी। भूखमरी। बेरोजगारी
बलात्कार होइत रहलैक अछि अन्धाधुन्ध। चुपचाप
ओ सहैत रहल अछि। अपन बाप-दादा आ पुरखाक नाम
सुनैत रहल अछि असंख्य। असंख्य। अव्याहत। गारि
आँखि मूनि। देखैत रहल अछि। प्रजातंत्रकेँ नाङट-उघार होइत
गदहाकेँ भाइ कहैत रहल अछि। पित्त मारि

ओकरो रहलैक अछि एकटा संस्कार। परम्परा
डेढ़ कट्ठा बाड़ी। उजड़ल घराड़ी
भूखसँ छटपटाइत दुहिता। बहीन। आ नारी
संतोषक एकचारी। सभ खेहारैत रहलैक अछि
ओकर छातीपर कील गाड़बाक लेल। हथौड़ा
चलबैत रहलैक अछि
ओ घुमैत रहल अछि गामे-गाम।
गाम जाहिमे राँटी। मंगरौनी। पिलखवार।

जितवारपुर। सलेमपुर। तरौनी। तारालाही। पाहीटोल सरिसव।
पिंडारुच। खराजपुर। रामपट्टी। सिमरा। केउटी। परसौनी। होवीभौआर।
शामिल छलैक।
गाम। जतए बाड़ीमे भाङआ पोखरिमे कुंभी छलैक। टाट पर तिलकोर।
आ लोक। इनार। कच्ची सड़क। दरबज्जा। पुस्तकालय।
मंदिर। सलहेस। ब्रह्मस्थान। खादी भण्डार। स्कूल। गाछी। बँसबिट्टी।
झगड़ा-फसाद। मोकदमा। छिनरपनी। पंचैती। परती-पराँत। शोषण।
मलेरिया बोखार।

गाम। जतऽ एक्केटा भाषा छलै। आ दुःख।
भूख। बीमारी। गरीबी। अशिक्षा। धर्म। अश्लीलता। विघटन।
प्रार्थना। पाशविकता। घुटन। तड़प।
पिछड़ापन। छुआ-छूति। जाति-पाँति। मूल-गोत्र। अन्हारे-अन्हार।
ओ घुमैत रहल अछि लगातार।
दौड़ैत रहल अछि।
चिचियाइत रहल अछि शहरे-शहर।
शहर। जाहिमे मधुबनी। दरभंगा। सहरसा। जनकपुर।
भागलपुर। पूर्णियाँ। मुँगेर। मुजफ्फरपुर। पटना। जमशेदपुर।
कलकत्ता। दिल्ली। बम्बई। मद्रास। अहमदाबाद। जयपुर
शामिल छलैक।
शहर जतए ओ देखैत रहल अछि नाटक।
ईर्ष्या। द्वेष। स्वार्थ। पदलोलुपता। नाच। गान। सर्कस। संस्था। लड़ाई।
शहर। जतए ओ सुनैत रहल अछि। नेताक भाषण।
सरकारी आश्वासन। मंत्रीक कीर्तन। घोंघावसंत। बैसाखानन्द।

डपोरशंखक अभिनन्दन-वंदन।
शहर। जतए ओ भोगैत रहल अछि। राशनक क्यू। मँहगीक चाप।
फासिज्म। जुलूस। हड़ताल। घेराव। छात्र। पुलिस।
शहर। जतए भेटैत रहलैक अछि। लाल बुझक्कड़।
चमचा-समूह। दुर्वासा। नारद। नाट्य-विशारद। साहित्य-मार्त्तण्ड।
सम्पादक प्रचण्ड। आलोचक उद्दंड। संगीत-रत्न। अथाह प्राचार्य।
अगबे आचार्य।

से आइयो ओ दौड़ि रहल अछि।
शहरसँ गामधरि पसरल अन्हारमे। भयाक्रान्त।
एक दोसरसँ टकराइत। मुट्ठी तनने। क्रुद्ध। आक्रामक। अशान्त।
अहाँ वा अहाँ वा अहाँ वा क्यो।
अनुभव कए सकैछ। ओकरा। कौखन। कतहु। अपना लग-पास।
हृदयमे।.........



समानधर्माक नाम

हे हमर समानधर्मा! आब समाप्तप्राय अछि
सत्ताइस वर्षक कारी-स्याह राति कुहेस
फाटि गेल अछि भिनसुरका लाल प्रकाशमे ई भए गेल अछि स्पष्ट
जे राजनीतिज्ञ अछि पाखण्डी, चोर
कि राजनीति, जनतंत्र, समाजवाद आ न्यायक पाखण्ड
नहि टीकि सकैछ आब आओर दुर्दान्त अछि मनुक्खक यातना
'टाइगर ब्राँड' खोल भऽ चुकल अछि उघार
अपन स्थिति-बोधसँ अपस्याँत
भाषण पर भाषण दए रहल सियार नहि भए सकैछ सफल
आब आओर बेशी दिन
आयातित दर्शन किंवा प्राचीन परम्पराक वैशिष्ट्य पूर्वज द्वारा
कीनल गेल उधार
हाथी, घोड़ा आ कित्ताक कित्ता खेत—सामन्तवादी अवशेषक
आब नहि रहि गेल अछि कोनो अर्थ—नग्न यथार्थक समक्ष।

शोषक अछि थोड़
आ बहुसंख्यक जनता भऽ गेल अछि आश्वासन
आ भावुकताक शिकार जाबी लागल बरद जकाँ
काटि रहल चक्कर पर चक्कर सरकारक टिटकारीपर मेहक चारू कात
आइ सभ समस्याक मूलमे अछि गरीबी

मुदा नहि छैक ककरो तकर परवाहि, राजनीतिज्ञकेँ तऽ कनियो नहि
स्वार्थ-सिद्धिक अतिरिक्त
नेता अफसर पुलिस आ जनता—सभक सभ अछि लागल
भरबामे अपन खाधि दुमहलाकेँ चौमहला बनयबामे
नहि छैक ककरो गरीबी हटयबाक चिंता तत्काल
दोहाइ यथास्थितिवाद! नहि छैक
ककरो पास कोनो उद्देश्य जखन कि ई अछि सर्वविदित सम्प्रेष्य
जे पैघ पूँजीकेँ बनायल जा रहल छैक देशमे आरो पैघ
सर्वहाराक काटल जा रहल घेंट दिने-देखार
आ एहि अनैतिक पूँजी-विस्तारक व्यापारमे शामिल अछि
मंत्री आ पुलिस आ सम्पूर्ण शासन-तंत्र।

आइ लोक व्यक्तिसँ भोट बनि कए रहि गेल अछि
कि नहि रहि गेल छैक
सर्वसाधारणक पास कोनो प्रकारक अधिकार संविधान बनल अछि फार्स
कि नहि रहलैक आब आत्मा नामक वस्तु ककरो पास
राष्ट्रीयकरणक एहि युगमे
अर्थहीनता आ कायरता आ भावुकता
बनि गेल छैक लोकक आचरण, मिथ्याडम्बर
भऽ गेल छैक आदर्श आ अवसरवाद आध्यात्मिकताक पर्याय
अनिश्चय आ असुरक्षाक कैंसरसँ रुग्न सम्पूर्ण देश
कए रहल अछि यात्रा हिमालयसँ कन्या कुमारीधरि
रोटीसँ जनक्रांतिधरि
गामसँ पार्लियामेन्टधरि

कवितासँ एटमधरि......आ अपन-अपन
लाशकेँ उघने चल जा रहल अछि लोक
क्रांतिक नारा लगबैत अन्यायक विरुद्ध
सरकारक विरुद्ध
वर्तमान व्यवस्था आ बुर्जुआ जीवन-पद्धतिक विरुद्ध
प्राचीक लाल किरिनमे—
बढ़ि रहल अछि असंख्य-असंख्य नर-मुण्ड मुट्ठी तनने कि आब
बन्द करबाक अछि जयजयकारक साहित्यलेखन
समाप्त करबाक अछि प्रवंचनाक नाटक संवादक परिपाटी
कि करबाक अछि जनताक मोह-भंग—हे हमर कर्ण.....हे हमर समानधर्मा।
❑

यमराजक विदेश-यात्रा

यमराज चल गेलाह अछि विदेश-यात्रा पर दीर्घकालक लेल
आ कंकावतीक दुर्बल कान्हपर
आबि गेलैक अछि शासनक गुरुतर भार अनायास सम्पूर्ण देशमे
भए रहल अछि अन्हेर-बाँट कोलाहल
आर्त्तनाद यमपुरीक राजधानी मध्य
केन्द्रित भए गेल अछि देशक सम्पूर्ण शक्ति हाकिम-हुक्काम
अफसर पहलवान अणु-परमाणु
विद्युत-प्रकाश गहूम कोइला मटिया तेल
गाम अछि पड़ल निर्जीव-निष्प्राण

मुट्ठी भरि नेताक हाथ बिका गेल अछि
देशक बुद्धि प्रज्ञा प्राण
युवा-वर्गक सम्पूर्ण ऊर्जा कला-मान भए गेल अछि बन्द सेठक तिजोरीमे
गल्ला मंत्रीसभक गोदाममे अछि बन्द सोना
हीरा आ जवाहरात उजरा सांढ़सभक लॉकरमे अछि सुरक्षित
हेरा गेल अछि दिशा-सूचक यंत्र कम्पास विवेक
सम्पूर्ण देश दिशाहारा सागरमे दए रहल हथोरिया
मंत्री प्रधान मुख्य अफसर पुलिस जवान
गरीबी हटयबाक निमित्त

समाप्त कए रहल गरिबहाकेँ सोल्लास योजनाबद्ध
भूख अनाचार आतंक असुरक्षा अलगाव आ असंतोष
आ आक्रोश पसरि रहल चहुधा जठराग्नि पजरि रहल
पुरिबाक सिहकी पर निरन्तर
कए रहल धारण प्रचण्ड रूप देश बनि गेल अछि
सम्प्रति रौड़ब नर्क राजनीतिक अखाड़ा विदेशी पर्यटक लेल
दर्शनीय स्थान
न्याय आ कानूनक मेटा गेल अछि नाम
सरकारी अफसर
बेचैत अछि टके सेर छुट्टी बाँटैत अछि पदोन्नति इनाम पत्नी
बहीन वा बेटीक विनिमयमे
अर्जित करैछ सुयश कुर्सी कार रेफ्रीजरेटर मकान
शेष भए रहल आम जनता समाप्तप्राय
मानवताक अध्याय गलत व्यक्तिक मुट्ठीमे बन्द
नियतिकेँ देखि छात्र-समुदाय भए रहल अछि गर्म
धीपल हीटर जकाँ लाल-भुजंग
ज्वालामुखीकेँ करबाक हेतु शांत कयल जा रहल प्रयुक्त
हंटर आ संगीन आ नापाम
बाढ़िकेँ रोकबा लेल
बान्हल जा रहल बालुक बान्ह
सेनाक भीत कयल जा रहल ठाढ़ गुजरातसँ बिहारधरि
भए रहल दौड़ा पर दौड़ा
बादशाह आ बजीरक एक संग लोक
देखि रहल तमाशा करैत गर्मा-गर्म बात आपसमे

दए रहल एक-दोसराकेँ पिहकारी
वातावरण भेल जा रहल निरन्तर औधत्यपूर्ण विषाक्त भयाक्रांत क्रुद्ध आ
अशांत

साहित्यक नहि रहि गेलैक अछि कोनो अर्थ
पूँजीपतिक विलासिता
आ मनोरंजक अतिरिक्त कविताकेँ मानल जा रहल अस्त्र
हमर प्रत्येक कार्यकेँ देल जा रहल
विद्रोहक संज्ञा सत्यकेँ झँपबाक लेल गढ़ल जा रहल
एक-एकटा मानक नवतुरियाकेँ जरयबाक हेतु किंवा
दिग्भ्रमित करबाक लेल निर्मित कयल जा रहल लक्षागृह अथवा बिड़ला
मन्दिर
अखबारमे नव-नव मोहाबिराक सुर्खी
चढ़ाओल जा रहल विद्रोहक गतिकेँ करबाक लेल मंद पतनोन्मुखी
कारण विद्रोह होइत रहलैक अछि सर्वदा
प्रस्थापना आ प्रगतिगामिताक विरुद्ध आदर्श
नहि भऽ सकलैक अछि कहियो यथार्थ-आचरण आ नैतिकताक शिक्षा
देनिहार
रहैत अयलाह अछि स्वयं ओहिसँ दूर वृद्धावस्थोमे
करैत रहलाह अछि गदहपचीसीक कार्य
दाव दवाब आ पूर्वाग्रहक बीच कौरैत रहलाह अछि अपन सौरा
बनबैत रहलाह अछि एकटा काचक घर
एकटा प्रभा-मंडल एकटा संसार
यमराज चल गेलाह अछि विदेश-यात्रा पर दीर्घकालक लेल.........
❑

गिरगिट

अहाँक गनगोआरि सनक आकृतिसँ भयभीत
हम मात्र चकित भऽ रहलहुँ अछि अहाँ
चुपचाप जनसाधारण दिस घुरा कए अपन पीठ
मिझरा जाइत छी पछुआर बाटे दलालसभक बीच आ
चाटुकारसभक करय लगैछ प्रतिनिधित्व गिरगिट जकाँ बदलैत अपन
रङ्ग अपन पार्टी अपन टोपी अपन झंडा
आ तखन.........
तखन अहाँक चेहरा होइत अछि देखबायोग्य—फोटो
खिचेबाक योग्य होइत अछि अहाँक मुखाकृति-विनत गर्धव सन नम्र
श्री-युक्त शील आ सौन्दर्यसँ सम्पृक्त कोनो
विदेशी घोरमे सानल अहाँक केश तत्क्षण
उज्जरसँ कारी भऽ जाइछ कोनो विशेष केमिकलमे नहायल अहाँक शरीर
माटिसँ सोन भऽ जाइछ टीनोपालक सफेदी उझकय लगैछ
अहाँक एक-एक वस्त्राभूषणसँ
चूबय लगैछ धारोष्ण दूध शोषितक रक्त
पानि भऽ बहय लगैछ चन्द्रामृत भऽ जाइछ अहाँक पसेना
इमनदारीक नकली लेबुलकेँ असली मानि
लोक अहाँकेँ नेतासँ भगवान बना दैछ आ हम........

हम अपन विस्फारित नेत्रसँ
अहाँक मुँह पर जनमैत-मेटाइत आकृतिसभक अध्ययनमे लागि जाइत छी।

अहाँक रक्तबीजी व्यक्तित्वकेँ देखि हम
क्षुब्ध छी आइ
कि हमर यथार्थ आ कल्पनाक बीचक दूरी बनल अहाँ
रङ्ग-विरंगक भ्रांति पसारबामे भऽ रहल छी कृतकार्य तत्काल
शासन-तंत्रक प्रभावें
कि साहित्यसँ समाजशास्त्रधरिक
बनल छी अहाँ एक मात्र पंडित दुर्धर्ष समाजसेवी बनि
छेकने छी सभटा बाट कि राजनीतिक अखाड़ाक सेहो अपनहि
विश्व-विश्रुत पहलवान
अपन मिथ्या अहमक तुष्टिक लेल ठाढ़ कयने छी कएकटा देवाल
वर्जनाक शीश-महल
सजौने छी ठाम-ठाम कामुकताक अन्त:पुर
अहाँक कोन अङ्गसँ इनकिलाबक होइत रहैत अछि स्वर-विस्फोट
कतयसँ निकलैत अछि समझौताक फणिधर
से क्यो नहि जानि पबैछ
बुझि नहि सकैछ क्यो
अहाँक मुँहपर फुलायल बिनोवाभावीय मुस्कीक अर्थ
अहाँक ठोरपर अट्टहास करैत
गोड्सेक क्रूरतामिश्रित हास्य कोना एक संग व्यंजित भऽ उठैछ
से नहि बुझैत छी हम

कि लोक किएक अहाँकेँ युग-पुरुष मानि एकटा भ्रम पोसबामे
लागि जाइत अछि ?

अहाँक चौपेतल स्वभाव आ तहिआयल कृतित्वकेँ देखि
स्तंभित भऽ गेलहुँ अछि हम
कि अहाँक चमचागिरीक प्रतिक्रियामे मात्र घृणा
व्यक्त कए पबैत अछि लोक आ आक्रोशमे
बेशीसँ बेशी
कोनो चौराहापर आबि अहाँ वा व्यवस्था वा सरकारक विरुद्ध
कोनो गोष्ठी वा सभाक आयोजन मात्र
कए पबैत छी हम किंवा
अहाँक मृत्युपर शोक-प्रस्ताव पारित कए एक साँझ आर
उपासल रहि जाइत छी हम किंवा
अण्डरग्राउण्ड भऽ कोनो ठोस सामरिक योजनामे लागि गेल छी हम
कि आश्चर्य
कोना क्यो कए लैत अछि वर्दाश्त सेठाश्रित होएब
कि कोना क्यो स्प्रिंगदार कुर्सीपर बैसि
कए लैछ संत्रासक यात्रा मोनक हेलिकाप्टरसँ बेमाय फाटल पयरक दर्द
आ खोपड़ीमे छटपटाइत गरजैत गनगनाइत
युवा-तुर्कक आवेशकेँ
कोना क्यो कए लैछ अनुभूत—से अछि रहल सर्वथा अनुसन्धानक विषय
बन्धु ! आब तऽ
अहाँक संभ्रांत हँसी सेहो लेबए लगलैक अछि लोकक जान

कि आब अहाँ घुरि जाउ अपना शीश-महल
वा अन्त:पुरक केलि-गृहमे कि समा जाउ संसद-भवनक कब्रगाहमे शीघ्र
कि आब नहि चाही हमरा
अहाँक वचनक आइसक्रीम किन्हु नहि चाही अहाँक ठिठुरल-सर्दिआयल
देहक धाह
—कि आब आगिकेँ पजारि कए राखि लेल अछि हम
कि हृदयकेँ फूकि कए भुजबाक अछि टिबिआएल करेजी
आ सत्य एवं असत्यक युद्धमे
न्याय एवं अन्यायक हवन-कुण्डमे युवा-वर्गक
सम्पूर्ण समिधाकेँ झोकि देबाक अछि आइ
नव सृष्टिक लेल
नव समाज आ नव सरकारक लेल.........


घून लागल वटवृक्ष

[एक]

कतेक निष्ठुर आ निरपेक्ष भऽ गेल अछि युग
कि आनक दुःख वा पीड़ापर
नहि भऽ पबैछ ककरो विश्वास, मृत्युसनक विराट सत्यपर सेहो
एकटा प्रश्न चिह्न कि लोक आब झूठ-साँचक झमेलासँ फराक
मात्र पेटक चिन्तामे सिकुड़ल
किंवा सुविधाक लालटेनक इजोतमे गदहोकेँ बाप
कहबामे संकोचक अनुभव नहि करैछ। समझौतावादी
लोक कोनो सपना, कोनो ताजमहल
वा मंत्री-पदक चाकरीक पाछाँ अपस्याँत अपन
विधवा बहीन किंवा सुन्नरि पत्नीक सीढ़ीनुमा देहक
बलपर आकास छूबामे
गौरबक अनुभव करैछ। कठमूड़ी लागल युग-चेतना
हिस्टिरियाक दौड़मे कौखन नाङट भए जाइछ आ लोक.......लोक
क्रांतिक सूचनाक भ्रममे कुनमुना उठैछ। जनसाधारणक आवाजकेँ
लोक तोड़ा जकाँ भजा
विदेशी-वस्तुक खरीद-बिक्री कए 'पद्मश्री'क उपाधिसँ
विभूषित होइछ कि गोत्र-मूलक बलें
अकादमी-पुरस्कारकेँ अर्जित करैछ कि लक्ष्मी-पुत्रक खुशामदक प्रतापें

लखटकिया पुरस्कार प्राप्त कए
रते-राती राजहंस बनि जाइछ। देशभक्तिक तगमा लगौने
शंख-श्वेत वस्त्रसँ देहकेँ सजौने
लोक झूठ आ बन्दूकक बलें देश चलबैत अछि
अपनाकेँ जनताक सेवक कहि लोककेँ ठगैत अछि, फुसलबैत अछि.....
❑

[दू]

लोक अनेरे डेराइत अछि, बाघक खोलकेँ
असली बाघ बूझि डरे थरथराइत अछि कि
आत्म विश्वासक कमीक कारणें, मिर्गीक रोगी जकाँ छटपटाइत अछि
अनास्थाक बिरड़ोमे फड़फड़ाइत सम्पूर्ण
अस्तित्व-दीप उर्ध्व-सांस गनैत
फड़कि उठैत अछि चेतनाक इतिहास अनभोआरे
लाल स्याहीमे अङ्कित भऽ जाइछ
युग-चट्टानपर भूखक गाथा, सुखायल देहक हड्डी
कोनो प्राचीन शिला-लेखजकाँ अनुसन्धानक विषय बनि जाइछ
स्तूपाकार नर-कंकालक पैघ जुलूस
हाहाकार करैत असंख्य-असंख्य नर-पिशाचक समूह
आ क्रुद्ध लहरचुट्टाक पंक्तिमे नुकायल
एकटा घुड़घूड़ा 'पार्लियामेंट-हाउस' सँ 'वाक आउट' करैत कोनो एकटा
नेता विक्षुब्ध
आओर घुन लागल व्यवस्थाक वटवृक्षकेँ लाल-पीयर तागसँ
गछाड़ि कए बन्हबामे व्यस्त महारानी
मँहगी आ राष्ट्रीयकरणक चाबुकसँ जनतंत्रकेँ छड़पिटबैत भवानी!

हरित-क्रांतिक प्रचार-प्रसारमे लागल फर्जी-प्यादा
कए रहल सरकारक जय-जयकार
घोड़ा अढ़ाइ घर चलबामे असक, लचार देशमे पसरि रहल
भूख, अकाल आ मँहगीक हैजा-बोखार!.........
❑

[तीन]

सरकारक विरोधमे जुलूस निकालब, हड़ताल आ घेराव करब
भऽ गेल अछि युग-सत्य, आम बात अपना पुरखाकेँ गरिआयब, बापकेँ
गंजनि करब, बात-बात पर
बमकब हमरालोकनिक स्वभाव
कहल जाइछ युवा-वर्ग सनकि गेल अछि
अपनहि पुरान खूनकेँ दूषित कहि
अपन जन्म लेबाक व्यर्थतासँ चनकि गेल अछि कने-मने अवश्य
कि ओकरामे नहि रहलैक आब कोनो लाज-लेहाज
ऊँच-नीचक ज्ञान, स्थान कालक ठौर-ठेकान
कि देख लेलक अछि ओ प्रत्यक्ष
चोर-द्वारिसँ निकलैत श्वेत-शुभ्र सुग्गरकेँ
बहराइत
आध पहर रातिमे थुथुन लटकौने संभ्रान्त-कुल-उत्पन्न
वारि-वनिताक संग रास रचबैत
वृषोदरक झुंड
कि चिर्री-चिर्री फाड़ि चुकल अछि सुविधावादी
आचार-संहिताक कारी-स्याह पन्ना, चाटि गेल अछि
संविधानक स्वर्ण-पृष्ठमे अङ्कित अष्टम अनुसूचीक एक-एकटा आखर

उद्घाटित कए चुकल अछि अमृत-कलशक सत्यासत्य
द्रक्षासवक बोतलमे राखल विदेशी शराबक गन्ध, लाल फीतामे बान्हल
सम्पूर्ण भविष्य
कि बांचले की अछि जकरा पीबि
ओ जी सकय अनन्त वर्ष, आ कए सकय
शत्रुक किलावन्दी, विभीषणक हत्या आ आणविक युद्धक घोषणा ?
सांचे, हमरा लोकनि बगदि गेल छी
अग्रजक शब्दमे — हमरालोकनि सनकि गेल छी.......
❑

[चारि]

लोक पहिने अपन पुंसत्वक रक्षा लेल
कुकूर पोसैत छल
अपन असली रूपकेँ नुका कए रखबाक लेल
एकटा मुखौटा बनबऽबैत छल बाहर जेबाक लेल
मिरजै सेहो सिया कए रखैत छल
मिथ्या दम्भकेँ जोगाकए रखबाक लेल बहुत रास
मिथ्यात्व जीबैत छल मुदा
फूसिक खेती कए सोना-रूपा उपजयबाक भ्रम नहि टीकि सकल
साँचे, यथार्थक आलोकमे नपुंसत्वक मूस नहि नुका सकल, जीबि नहि सकल
बिसुखल महीसक पड़रू अंडायल माछ छटपटाइत रहल
कोठीक दोगमे करिक्की बिलाड़िक आँखि काचक गोली जकाँ चमकैत रहल
अँतड़ीक दुर्गन्धिकेँ नहि मेटा सकल
'रसके मुनीर'वा विदेशी मुद्राक स्फीत-चाप
नहि टीकि सकल ताशक महल किन्नहुँ बालुक भीत नहि रहि सकल ठाढ़

नढ़िया साँझ होइते भूकय लागल
अपन परिचय देबाक लोभ नहि कए सकल संवरित, मूर्खता–विज्ञापनक हेतु
नाटक भइये कए रहल
लोक–हू–हूकए छुट्टल पाबि अपन अग्रजक परिचय–पात, दोगला व्यक्तित्वक प्रति
संदिग्ध भऽ उठल लोक, मायक पवित्रतापर आबय लगलैक आँच
दनादन कुकूरकेँ गोलीसँ उड़ा देल गेल, जराओल गेल
मुखौटाकेँ तत्काल आ मिरजैकेँ फाड़ि देल गेल निर्दयापूर्वक
पितामहक अश्रुसिक्त आँखिक समक्ष पुरान अध्यायकेँ कयल गेल समाप्त
क्रोधाग्निमे धधकि उठलाह ब्रह्मा अपन पुत्रक किरदानी पर भऽ गेलाह शांत, बहीर आ बौक
लोक आब छागर पोसैत अछि, सपना देखैत अछि आ फाटल–चिटल वस्त्रसँ
शरीरकेँ सुरक्षित रखैत अछि। लोक पहिने अपन पुंसत्वक रक्षा लेल कुकूर पोसैत छल.....
□

कलकत्ता आ राजकमल

राजकमल—अंतिम साँसधरि मुक्तिक बात सोचयवला
राजकमल मात्र मधुसूदन बाबूक सुपुत्र,
शशिकान्ताक पति आ दिव्या, मुक्ता तथा नीलूक पिते नहि छलाह
ओ कलकत्ता, वा पटना वा वनगाम महिसीएक लोक नहि
मैथिली आ हिन्दीएक लेखक नहि
ओ सम्पूर्ण संसारक युवा–पीढ़ीक पक्षधर छलाह
नवताक प्रवक्ता आ व्यवस्थाक प्रतिपक्षी छलाह
ओ अग्नि–संतान छलाह
ओहि आगिक परिणति छलाह, ओ आगि
जे हुनका
बेहाला, रामबगान आ रंगीन राति देने छलनि
ओ कलकत्ता महानगरक हरामखोरसभक मोहक जालमे फँसि गेल छलाह
काली घाटक ट्राम तरमे पिचा कए लेहूलहुआन भेल छलाह
एहि शहरमे
चिड़ियाखानक बाघ जकाँ बन्द कए देल छलाह ओ
पूँजीपतिक महा षड़यंत्रमे फसाओल गेल छलाह ओ—जतए
चाँदीक पहाड़ आ सोना–रूपाक महल छलैक,
शरीरक मांसु बेचैत युवती ललना छलैक
आ जतए भारतीय जनतंत्रक कोनो आइन–कानून नहि छलैक।

राजकमल बेरि-बेरि ठकल आ फुसलाएल गेलाह
एहि शहरक विलासी व्यवस्थाक महाजालमे
माछजकाँ बझाओल गेलाह बनि जयबाक लेल एकटा चमचा,
एकटा नट वा भोल्टू जाहिमे नुकायल छलैक
सेठसभक रूढ़िवादी परम्पराक नीचता
ओकरहि बेटीसभक फेरलाहा नूआसभक लाल-पीयर दाग........
आ भेल छलनि हुनका एतहि सत्यक साक्षात्कार
पुनः भरिये रातिमे
भऽ गेल छलैक पूरा शहर परिचित एकटा नब राजकमलसँ
आ डूबैत रहलाह ओ बहुत दिनधरि
नव-नव चभच्चामे, बमकैत रहलाह बनैया पाड़ाजकाँ
सौंसे जंगलकैं लतखुरदनि करैत रहलाह
साँढ़ बनि सौंसे शहरकैं चरैत रहलाह
शहरसँ शहरधरि उब-डुब करयवला ई लोक नहि पोसलनि
कहियो कोनो समझौता
आ तैं छटपटाइत रहलाह घायल कुकूरजकाँ, बलि प्रदानक छागरजकाँ
कएक-कएक दिन सहैत रहलाह, बिनु झुकनहि हँसैत रहलाह।
आ एक दिन ओ ताकि लेने छलाह अपना लेल
एकटा कोनो 'कंकावती'
नारी सन नारी
आ यमराज बनि कयने छलाह घोषणा :
कंकावती हमरा सोझामे पड़लि अछि आ आब
एँहि षडयंत्रवादी नगरमे
यैह टा सहारा रहि गेलि अछि—जतए कोनो भ्रम नहि,

झूठ नहि ....आ
रति-पीड़ा, वंचना, प्रभुता आ पशुताक
जटिलतम प्रयोग कयल अछि हम
ई कंकावती—यमराज-संगिनी नहि-हमर कंकावती—
मात्र नारीएटा नहि—वेश्या, प्रेमिका
आ पत्नीक सम्मिलित रूप अछि ओ—
आ एही प्रकारक कैकटा पोस्टर लटकौने
बढ़ल ढाढ़ी आ मोटका फ्रेमक चश्मा लगौने पहुँचल छलाह राजकमल
जोड़ा मंदिरक बासामे सुस्तयबाक लेल
अपन लोकवेदक आशीर्वाद आ सिनेह पयबाक लेल कने काल विलमल
छलाह आ सद्यःप्रसूत 'स्वरगन्धा' कैं संग लए
पड़ाएल छलाह दरिभंगा
मुदा कंकावतीक स्मृति, नहि लेबए देने छलनि हुनका
कनियो चैन
आ लए अननै छलनि बेमार वेश्याक नगर—बनारस
नजीमाबादमे आबि कए नजरबन्द भऽ गेल छलाह राजकमल
आ 'शहर छल-शहर नहि छल' कैं लिखैत
कंकावतीक यमराज पड़ा आएल छलाह नुकयबाक हेतु
कलकत्ताक कोनो झोंझ-झाँखुड़मे
बताह भऽ गेल छलाह।
'पाथर-फूल'क रचनामे यथार्थसँ टकरायल छलाह
'आन्दोलन' करैत-करैत सनकि गेल छलाह
राजकमल चौधरी—
आ एक दिन अचानक कलकत्ताक फुटपाथ,

चौरंगीक भारतीय संस्कृति परिषद धर्मतल्लाक मैदान विभिन्न
मंदिरसभक पछुआर, मैथिल परिसर,
इजोतमे डूबल फ्री स्कूल स्ट्रीट आ सोनागाछीक कतेको घरक चौकठिकेँ
आ कमसँ कम दू हजार वेश्या—आ
कोनो एकटा अलकनन्दा केँछोड़ि चल गेल छलाह राजकमल
उदास करैत सभकेँ एक बेर
एहि शहरक षड़यंत्रसँ मुक्तिक रास्ता तकैत
एतुक्का सम्पूर्ण व्यवस्थाकेँ घोड़ाक टापसँ लतखुरदनि करैत
दऽ गेल छलाह कलकत्ता केँ 'मछली मरी हुई'
एकटा मुइल माछ, एहि शहरकेँ एकटा विराट सत्य :
कि जीबाक लेल फ्रॉड आ बैमान होएब आवश्यक
किंवा फुटपाथपर मरब ध्रुव
आ एहने बहुतो बात—मत्स्य-न्यायक नव संस्करण
शंकरक चौरंगीकेँ करबाक लेल आत्मसात
कयने छलाह कोनो 'स्याटा बोस'क संग प्रेम
आ फोकला चटर्जी जकाँ कए देने छलाह ध्वस्त
एहि पूँजीवादी व्यवस्थाकेँ
सागर-संभवा, छिन्नमस्ता, जरैत मकानमे किछु लोक
आदि सैकड़ो कथाक नायक—राजकमल
चल गेल छलाह श्मशान 'गिन्सवर्ग'क संग
बिसरबाक लेल सभटा पुरना इतिहास
अपन अस्तित्व, अपन संज्ञाकेँ मेटा देबाक लेल
भुक्खल जनता आ देशक अनैतिकताक विरुद्ध बमकल छलाह ओ
आ एक बेर ब्रह्मक ख़ोजमे

सम्पूर्ण पापाचारसँ मुक्त होयबाक लेल तकने छलाह एकटा रस्ता
मादकताक एकपेरिया
अजोह मासु, गांजा, भांग, अफीम, शराब आ जाजक संगीत
आ विदेशी पर्यटक 'गिन्सबर्ग'
बना गेल छल राजकमलकेँ रोगी बेमार
मुदा समीर, मलय आ सुबिमल बसाकक द्वारा
बनाओल गेल छलाह ओ एक पीढ़ीक अगुआ—भूखल पीढ़ीक मसीहा
महा विद्रोही
आ भर्ती भऽ गेल छलाह पटनाक राजेन्द्र सर्जिकल अस्पतालमे
लिखबाक लेल 'मुक्ति-प्रसंग' कि
लोककेँ आब एहि लोकतंत्री संसारसँ फराक
भऽ जयबाक चाही
चल जयबाक चाही कसाइ, गँजेरी साधु
भिखमंगा, अफिमची, रंडीक अन्हार दुनियामे
श्मशानमे अधपक्कू लाशकेँ नोंचि
खाइत रहब श्रेयस्कर थिक जीवित पड़ोसियाकेँ खा जयबासँ
हमरासभकेँ आब नहि रहबाक अछि शामिल—
एहि धरतीसँ मनुक्खकेँ सर्वदाक लेल नष्ट कए देबऽ वला
षडयंत्रमे—
आ शहर, गाम, आपरेशन, वेश्याक मोहल्ला
पूँजीपतिक षडयंत्र—सभसँ टक्कर लइ वला राजकमल
नवतुरियाकेँ छातीसँ लगबऽ वला,
ग्रामीण वातावरणमे मुक्तिक बात सोचऽवला
जीवनकेँ नव रस्ता—

नव मोड़ देबएवला राजकमल—विसंगतिक शिकार राजकमल
पुनः भर्ती कए देल जाइत छथि पटनाक अस्पतालमे
आ ताकऽ लगैछ आपरेशन टेबुल, ईथर-निद्रामे—अथवा
संभोगक चरम परिणति मे— स्वाभाविक
सुविधाप्रद मृत्युक मार्ग
आ,
आ एक दिन, अझुके दिन भेटैत छैक कलकत्ताकैं एकटा तार :
"राजकमल एक्सपायर्ड टुडे मॉर्निंग"..........

अहाँसँ बहुत किछु कहबाक छल

दिसम्बरक एहि सर्दिआयल साँझमे
टाटा सेन्टरक बस-स्टॉपपर
'टू डाउन'क प्रतीक्षामे ठाढ़ अनगिन यात्रीलोकनिक बीच
आइ किएक मोन पड़ि अयलहुँ अहि हे हमर विगत यौवना मंजरी दासगुप्ता।

आब नहि संभव
एहि यांत्रिक जीवनक जटिलतामे घंटा भरि प्रतीक्षा करब
मुंगफलीक दानाकैं फोड़ि-फोड़ि एक-एक पल काटब
अबंड जकाँ अनेरे एम्हरसँ ओम्हर घूमब
वा लग-पासमे ठाढ़ि कोनो जुआयल युवतीक देह-यष्टिसँ
अहाँक अंग-प्रत्यंगक तुलना करैत रहब भूगोलकैं पढ़ब
कि उमेरक एहि ढलानपर ठाढ़ कोनो एकटा बड़क गाछ
कि सम्बन्धक चनकल भीतसँ हुलकी दैत पिपरक कनोजरि
कि लाल सागरकैं पार करैत एकटा गणेश-वाहन
कि यशक शिखर पर उदित कलंकित चान
कि नोन-रोटीक चिन्तामे ठाढ़ि कोनो संध्या
कि 'होम वर्क' पूरा करयबाक लेल औंघाइत कोनो कार्तिक
कि गुरुक अयबाक प्रतीक्षामे बैसल कोनो एकलव्य
एक-एक कए सभक चित्र आँखिक सोझामे प्रतिबिम्बित
भए उठल अछि

कि आब नहि अछि मर्यादित एकहु पल विलमब जीवनक एहि मोड़पर
हे हमर चिरपरिचिता मंजरी दासगुप्ता।

आब नहि अछि संभव
अहूँक लेल विक्टोरिया मैदानमे घंटाक घंटा घूमब
कॉलेजक मादे वैजयन्ती-वनक बीचमे कोनो दुष्यंतक संग चोरा-नुक्की खेलब
स्फटिक तुल्य सरोवर-जलमे जीवनपर्यन्त अपन रूप निहारब
वा नागफनीक हरियर-हरियर डारिपर 'हेयर पिन' सँ अपन नाम लिखब
हुगली तटक शैकत शैय्या पर अलक्तक रंजित नहसँ स्मृति-इतिहास आंकब
कि आफिसक फाइलक अम्बारमे पिचायलि कोनो रूपगर्विता
कि बॉसक आग्नेय दृष्टि पर हास्यक फुहार करैत सम्पूर्ण आधुनिका
कि धीया-पुताकेँ पोल्हयबामे अपस्याँत कोनो पिता
कि राशनक लाइनमे ठाढ़ कोनो पति
कि मटिया तेलक लेल धक्का-मुक्की करैत कोनो आहत भाय
कि आटा सनबा वा चूल्हि पजारबाक गुनधुनमे हकन्न कनैत बहीन
एक-एक दृश्य-परिदृश्यकेँ स्वेटरक काँटापर उकेरैत
अहाँक अभ्यस्त आँगुर बस-स्टॉपपर अबैत देरी सहसा
शिथिल भऽ गेल अछि
कि एहना स्थितिमे आब नहि अछि संभव बससँ उतरब यौवनक
निष्क्रमण बेलामे
हे हमर अनुभवशीला मंजरी दासगुप्ता!

❑

कवितायाः प्रतिवादम्

काल-ध्वनिकेँ श्रवण करबाक प्रयत्न
जारी अछि निरन्तर समानधर्माक बीच
बिम्ब-प्रतिबिम्ब चित्रित भए रहल काल-खण्डपर।
युग-यथार्थकेँ
के मेटा सकैछ। पेटक आगि मद्धिम के कए सकैछ
आक्रोशक स्वर। अधिकारक लड़ाइ
सुरसाक रूप धारण कए रहल अछि। नहुँ-नहुँ बदलि रहल
मुखौटा। विपटा
आ ओकरे नामपर
भए रहल साम्प्रदायिक दंगा। जातिवादक एलान
राजनीतिक हत्या सम्पूर्ण देश पजरि रहल अछि......।

एहना स्थितिमे कोना नचती पृथ्वी अहाँक कहलापर
असहमति आ क्षोभ आ घृणा आ विरोधक रूपमे
फौलादी हाथ उठले रहत
तनले रहत मुट्ठी सदिखन
स्तवन लिखबाक व्यामोहमे जुनि पड़ू हे मीत
नहि अयलैक अछि सरिपहुँ एहि अग्नि-यात्राक सीमान्त
कोन लाथे लगयबैक पूर्णविराम
व्यर्थ नारा लगयबाक कोन काज

शोकगीत गयबाक कोन प्रयोजन
रेडियो वा दूरदर्शनक हाथे बिकयबाक कोन प्रासंगिकता।
मौसम अयला पर देखल जेतैक, तैयो एखन एतबेसँ
काज नहि चलत
अन्ततः निर्णय लेबहि पड़त—व्यवस्था आ जनगणमेसँ
एककेँ स्वीकारहि पड़त
शत्रु आ मित्रक बीच एकटा स्पष्ट रेखा खींचहि पड़त
असमानता आ अभावक प्रतिपक्षमे
ठाढ़ होमहि पड़त
अन्याय आ शोषणक धज्जी उड़ाबहि पड़त
महा मौनक लौह-केबाड़केँ तोड़हि पड़त हे बन्धु!
ओना इतिहासहंताक कमी नहि एहि देशमे
तखन कविता संभवामे चेफड़ी लगयबाक पाछाँ कोन चक्रचालि अछि
कॉमरेड ?
रजनी-सजनी लिखबाक कोन बेगरता
मीताक नाम चिट्ठी लिखबाक पलखतियें कतय
उठा रहल घोघ तिमिर—कहब अछि फूसि
सहस्त्रबाहु एखनो नहि मरि सकल अछि—
सैह समाचार भेटल अछि निज सम्वाददाता द्वारा
    की कविताक परिभाषाकेँ आब बदलय पड़त ?
    की सम्पूर्ण आचार-संहिताकेँ नकारय पड़त ?
    की परजीवी मनोवृत्तिकेँ सर्वदाक लेल त्यागय पड़त ?
    की आत्म-परीक्षणक आलोकमे
    अपनहुँसभक पुनर्मूल्यांकन करय पड़त.....?

❑

अस्ताचलगामी सूर्यकेँ प्रणाम

एक जड़ता
जे मन प्राण आ चेतनापर
पसरल जा रहल अछि निरन्तर
महाशून्यक विस्तार
निधुनन अन्धकार
नहि कोनो ओर-छोर पारावार
काल समुद्रक महावक्षपर टिमटिमाइत
        एकटा अग्निपिण्ड
उत्ताल तरंगक बीच संघर्षरत
        एकटा वीर योद्धा-मत्स
झपट्टा मारैत अनेकानेक बोआर
मधुमाछी जकाँ लुधकल—टेंगरा पोठी इचना
तैयो,
तैयो विजयोल्लासक स्मित हास अछि पसरल
धानक लाबाजकाँ जल-तरंगपर, शैकत शैय्यापर
इजोरियाक चटाइपर!
एकटा मोनक वितान—
शांत निस्तब्ध रजनी

सुगन्धिक बएन बटैत घर-घर
अलसायल बसात आ
कोनो घरसँ बहराइत चीत्कारक मर्मभेदी स्वर
स्त्रीक आर्तनाद
गोलीक अवाज बम-विस्फोट
थाना पुलिस कचहरी तमाशा
खेल खतम
व्यवस्था द्वारा अभियुक्तक तलाशीक आश्वासन
तैयो,
तैयो लोक अछि सूतल निसभेर वा गबदी मारने
कोनो गांडीवधारीक प्रतीक्षामे
कोनो भगत सिंह
कोनो आजादक प्रतीक्षामे!

एकटा महायज्ञक विज्ञापन—
देशपर युद्धक संभावना
अकासमे मड़राइत झुण्डक झुण्ड गिद्ध
आणविक शक्ति-परीक्षणक समारोह
गृह-युद्धक आगिमे पजरैत सम्पूर्ण देश
पाखंडी नेतालोकनिक हाथमे गुमराह
दिग्भ्रमित युवा-शक्ति
सम्पूर्ण आन्दोलनकेँ समाप्त करबाक उपक्रम
प्रतिक्रियावादी शक्तिक ताम-झाम
चमचा-सम्मेलन, पराजित-पराभूत

जयचन्दक राजनीतिक षडयंत्र, अन्हरजाली
महारथी महायोद्धा मन्त्र-विद्ध
तैयो,
तैयो होमक धुँआसँ लोक नहि भऽ सकल
अछि आन्हर
गाम एखनो पजरि रहल अछि
कस्बा एखनो सुनगि रहल अछि
शहर एखनो लहकि रहल अछि
❑

कविताश्री पाटलिपुत्रम्

लोकतन्त्रमे वर्जित होइछ। बाजब। सरकारक खिलाफ। भ्रष्टाचार। अन्याय। बेरोजगारी। भूख। आ। दमननीतिक विरोध करब। मानल जाइछ अपराध। तेँ फाँसीवादक विरुद्ध कविता भए गेल अछि ठाढ़। आततायीकेँ करबाक लेल अपदस्थ। कविता बनि गेल अछि। बृहत्तर जन-आन्दोलनक नारा। आयुध। बुलेट। बन्दूक।

कविता। जखन नहि करैछ। ककरो रक्षा वा वध। भए जाइछ ओ तखन। व्यवस्थाक अंग। बैंक वा तिजोरीक। शोभाकरक पदार्थ। सरकारी फाइलक। लाल फीता। कोनो टाटा वा बिड़ला वा डालमियाक बेटीक रीबन। रूमाल। तहिना। विद्रोह जाधरि नहि लैछ। जन-आन्दोलनक रूप। नहि भेँटैछ जाधरि। किसान-मजदूरक। सक्रिय सहयोग। विद्रोह बनि जाइछ। अन्ततः। समझौता। व्यवस्थाक पोषक।

विद्रोह। आ। विद्रोहाभासमे। होइछ महान अन्तर। जेना जीवन आ नाटक। युद्ध आ टाटक। राता-राती। इनकिलाबक सपना देखयवला लोकसँ। नहि भेलैक अछि। कहियो क्रान्ति। क्रान्ति कोनो नाटकक पूर्वाभ्यास नहि। मात्र क्रान्ति होइछ। ओहिमे बकसल नहि जाइछ। नेना। जुआन। पूँजीपति। किसान। ककरो छोड़ल नहि जाइछ। सभकेँ करए पड़ैछ। अपन-अपन रक्तक होम। भोगए पड़ैछ। अपन-अपन यातना। संत्रास। बेमारी। आ। भूख। सभक लेल। जीवनक लेल। नव भिनसरक लेल।

लोक। कारी-गोर। छोट-पैघ। धनिक-गरीब। कोनो प्रकारक भए सकैछ। मुदा ई अछि अकाट्य सत्य। जे सभक रक्त लाले होइछ। परञ्च। रक्त। जे सड़कपर डबकल अछि। खेतमे सुखाएल अछि। गोलीमे लेभराएल आ टोपीमे नुकाएल अछि। ओ सर्वहाराक रक्त अछि। बनल अङोर। आ देशव्यापी एहि अग्निकाण्डमे। पमरियाक तेसर। नेताक चमचा। खोजि रहल। वटवृक्षक छाहरि। व्यवस्थाक आश्रय। विपक्षमे मात्र कविता ठाढ़ अछि। हजामक छूरा देखाइत अछि। डोमाक कत्ता खनखनाइत अछि। बोनिहारक हाँसू चमचमाइत अछि।

❑

चिट्ठीक उतारा

[मोहन भारद्वाजक लेल]

प्रिय भाइ

अत्र कुशलम् तत्रास्तु

पढ़ल गुनल प्रकाशनक सम्बन्धमे

अपनेक अमूल्य विचार

मुदा नहि छथि संस्थानमे क्यो इष्ट-मित्र

नहि छथि कोनो सम्बन्धी वा सहयोगी-सलाहकार

कोना होयत संभव

एहना स्थितिमे कोनो नवतुरियाक पोथी-प्रकाशन

कोना सहन करतैक

नव पिपहीक लहलहाइत पल्लव

जीर्ण-शीर्ण मृत्यून्मुखी गाछकेँ कोना हेतैक सहय

अवर्णक सवर्णक बीच प्रवेश

जाधरि नवतुरिया-वर्ग नहि कए दैछ धकिया कए कात

सत्ताक कुर्सीसँ सट्टल

ओहि तमाम जरदगब अकार्यक विद्वद्मण्डलीकेँ.............

भाइ बेस लिखल अहाँ

पोथीसभक प्रकाशनक सन्दर्भमे

मुदा हमरा सनक कतेको

युवा लेखकक कृतिसभ अन्हरियामे सूतल

कए रहल अछि प्रतीक्षा

कोनो कवच-कुंडलधारी कर्णक

जे अपन सधल हाथे छोड़ि सकय किरण-वाण

फेकि सकय प्रक्षेपास्त्र

आ ओकरासभकेँ आनि सकैक

प्रकाशनक पंक-पयोधिसँ बाहर

मुदा

मुदा कहाँ लए सकलाह अछि जन्म कोनो दधीचि

कहाँ आबि सकलाह अछि कोनो मार्टिन लूथर किंग

कहाँ

कहाँ अवतरित भए सकलाह अछि युद्धक लेल कोनो युयुत्स

कोनो गाण्डीवधारी पार्थ ?

एकर प्रतिकूल—

अनेको एकलव्यक औंठा कटबाक लेल

कए रहलाह अछि षडयंत्रक व्योंत

बेगरते आन्हर

राज्याश्रित द्रोणाचार्य.............

पूर्वमहाभारतक एहि कोलाहलपूर्ण वातावरणमे

ध्वनित भए रहल अहर्निशि

गोत्रवादक मंत्रोच्चार बाजि रहल

जातिवादक रसनचौकी

बनाओल जा रहल स्वार्थक सुर्खी-चूनसँ ललितगर पूल

पहुँचबाक लेल ओहि पार
दोहाइ सरकार!
नव दिशाहारा अभिमन्युक लेल निर्मित कयल जा रहल
गोलैसीक अभेद्य चक्रव्यूह
शकुनिक कहाँ अछि एखनो अभाव
मुदा नहि अछि कोनो एकलव्य औंठा कटयबाक लेल प्रस्तुत
बिसरि जाथु द्रोणाचार्य पहिलुक बात
अभिमन्यु लए चुकल अछि पूर्वहि
चक्रव्यूहसँ निकलबाक प्रशिक्षण पाकिस्तानमे जाय
एहना स्थितिमे—होमय दियौक युद्ध
आ एहि महायज्ञक हवन-कुण्डमे
अपनहुँक समिधा होइक अर्पित—ताही विश्वासक संग
वीरेन्द्र—अपनेक अन्तरंग.............

❑

लोक सुनय लागल अछि आब

सुनू
हमर आ अहाँक ई युद्ध चलिते रहतैक
बढ़िते रहतैक हमर डेग
अहाँ वा अहाँक लोक
आब आर बेशी दिन नहि राखि सकैछ मोकि कए लोकक गरदनि
दबा कए गरीबक कंठ
आब आर बेशी दिन नहि चलि सकैछ शतरंजक फर्जी खेल
आब आर दूषित नहि भए सकैछ युवा रक्त
ओना हम जनैत छी जे अहाँ नहि छोड़ि सकब
सत्तापरसँ अपन अधिकार
बिना अंतिम लड़ाइ लड़ने
करेजीजकाँ जनसाधारणकेँ भूखक भट्ठीमे भुजबाक पहिने
नहि लए सकैत छी अहाँ कनियों कालक लेल चैन
चिबबैत-चिबबैत शासनक सुखायल हड्डी
टपकए लागल अछि अहाँक कल्लासँ रक्तक बुँद
नाङट भए गेल अछि अहाँक समाजवाद
कुसियारक सिट्ठी भए गेल अछि अहाँक प्रजातंत्र
बेनग्न भऽ गेल अछि लोककेँ फुसलयबाक सब प्रयत्न

आब चिर्री–चिर्री होमय लागल अछि अहाँक भाषणक सबटा पन्ना
जानि गेल अछि लोक अहाँक मुस्कीक भाषा मौनक व्याकरण
नेप चुयेबाक जादू
उठा लेलहुँ अछि अहाँ अपन अंतिम हथियार
टेमी मिझेबाक समय आबि गेलैक अछि साइत
लोक सूनय लागल अछि आब नव सूर्यक आगमनक पद–चाप
सुनू, मुर्दासँ भरल श्मशानक ई देश हमर नहि भए सकैछ
युवावर्गसँ भरल जहलखानाक ई देश हमर नहि भए सकैछ
चोर–डाकू सभक ई देश
गद्दार मक्कार आ खुनियासभक ई देश
आदमखोर आ शोषणक ठिकेदारसभक ई देश हर्गिज–हर्गिज
हमर नहि भए सकैछ.........

❑

खबरदार

अस्थिरताक एहि क्षणमे
भूमण्डलीकरणक परिणामस्वरूप
युद्धक किनारपर ठाढ़ वैश्वीकरणक प्रक्रियामे
दू खण्डमे विभक्त एक्कीसम शताब्दीक मानव–समुदाय
अपनहि बुनल जालमे फँसल
महामत्तक मल्लाह
पोसुआ साँपक दंशसँ छटपटाइत महाशक्तिक अधिवक्ता
विस्फोटक वातावरणमे ध्वस्त
अभ्रस्पर्शी महासुरक्षित शीश महल
संभाव्य विध्वंस—
महा विश्वयुद्धक संभावना
जीवाणु ओ परमाणु बमक प्रतियोगितामे अपस्याँत
बहुतो देश, जाति, सम्प्रदाय
आतंकवादक पराकाष्ठा
बेगरता अछि एहना अवस्थामे कोनो चाणक्यक
जन–शक्तिकेँ विश्वासमे लए ठोस निर्णय लेबाक अछि,
सुरक्षा–कवचसँ संयुक्त देशक पहरुआकेँ सावधान करबाक अछि,
यत्र–तत्र भेष बदलि घूमि रहल नरभक्षीकेँ
खबरदार करबाक अछि,
पिशाचक षडयंत्रकेँ अविलम्ब ध्वस्त करबाक अछि।

❑

सावधान

लोक हल्ला करए वा सूतल रहए निशबद्द
व्यवस्थाक संग
जी-हजूरी करए वा चापलूसीक रबड़ी बाँटए
मनुष्यताकेँ ताख पर राखि
निर्लज्जताक नाटक करए
किंवा समझौताक शीश-महल उठाबए
नहि डरबाक अछि किन्हुँ हमरालोकनिकेँ सरिपहुँ
मसिजीवीकेँ
होएबाक नहि अछि हताश—
कारण ओ जहिना अछि तहिना रहए चाहैछ
यथास्थितिकेँ कायम राखए चाहैछ
कुर्सी, शासन आ शक्तिक आगाँ
नहि चाहैछ जे लोकक जड़ता टूटैक
मोह-भंग होइक
तैं कि हम अहिना चुप रहब, जाबने रहब मुँह
बन्न कएने रहब कान
नहि, किन्नहुँ नहि—
हम लड़ब अपना रचनाकेँ प्रक्षेपास्त्र बनाए
भाषाकेँ ब्रह्मास्त्र बनाए
ध्वस्त करब धूमकेतु बनि जड़ताक संसार
'मानव-बम' बनि करब सुड्डाह
अरि-दलकेँ
सुप्रभातक लेल।

❑

होशियार

घोटाला, अराजकता आ आतंकवादसँ आक्रांत
हमर देश, हमर माटि, हमर पानि
मर्यादाक अतिक्रमणमे व्यस्त हमर सत्ताधारी तंत्र
जातीय हिंसा ओ हत्याक नग्न-प्रदर्शन
राजनीतिक अपराधीकरण
संसारक महान प्रजातांत्रिक देश आइ
अपराधी तत्वक संरक्षणमे अछि फँसल
नेता ओकरहि दैत अछि दोहाइ
आचार-संहिता रसातलमे अछि धँसल
एक नव वर्गक भेल अछि निर्माण
सर्वथा भिन्न, अराजक, चुस्त ओ चालाक जे
देशक नब्बे प्रतिशत जनताकेँ लूटि रहल निर्बाध
तैं रहबाक अछि चौचक अहर्निश
कोंढ़ी, फूल, जमीन, आसमान—किछुओ बेचि सकैछ नर-पिशाच
देशकेँ बन्हकी राखि सकैछ कौखन ई शैतान
अस्मिताक रक्षा लेल
रहबाक अछि सतत तैयार, सावधान, होशियार!

❑

देश-दर्शन : बीसम शताब्दीक सीमान्तपर

अवग्रहमे पड़ल जनसामान्य
दावपर चढ़ल लोकवेदक अस्तित्व
देसकोसक अवस्था भयावह
नेत्री-वर्गमे चलि रहल टँगघिच्ची, छिटकी-कुश्ती
निर्लज्जताक सामूहिक प्रदर्शन
कसाइ द्वारा भए रहल अहिंसापर प्रवचन
लदबदाएल महींसजकाँ अफड़ल-पसरल अछि सरकारी-तंत्र
डम्हाएल लतामजकाँ वयोवृद्ध नेता
हुरारजकाँ खिखिया रहल अछि विधान-सभा-कक्षमे
आ मर्यादाक शील-हरण होइत देखि रहल सभक्यो ककरो
मुँहसँ नहि फूटि रहल बकार—
यूरिया घोटाला, चारा घोटाला, हवाला कांड
सेंटकिट्स जालसाजी
लाखू भाई पाठकक संग कएल गेल धोखाधड़ी—
देशकेँ लुटबाक चक्र-चालि
कुसियारक सिट्ठी जकाँ चिबाकए जनताकेँ फेंकि देबाक उपक्रम
'सर्फ' वा 'एरियल' मे धोल धप-धप करैत वस्त्रमे सुसज्जित नेतालोकनि
निमू जनताकेँ ठगबाक एक-सँ-एक योजना बनयबामे छथि व्यस्त

अपस्याँत 'वोट बैंक कैपचर' करबाक लेल अहर्निश—एक संग
डिस्को, पॉप, अष्टयाम ओ शास्त्रीय संगीतक कार्यक्रम
एक मंचपर उपस्थित माइकल जैक्सन आ पंडित रविशंकर।
उपभोक्तावादी अर्थनीति ओ बजारू अपसंस्कृतिक
एहि दौड़मे शुद्धता बिला गेल अछि
वर्णसंकरीय व्यवस्थाक वर्चस्वक समक्ष भारतीयता
खण्ड-खण्ड पाखण्डमे बदलि गेल अछि
भूमण्डलीकरणक एहि अन्हरदौड़मे
एक-दोसराकेँ काटि, बजारि आगाँ बढ़ि जएबाक घोड़दौड़
प्रारम्भ भऽ गेल अछि
इलेक्ट्रानिक मीडियाक भड़कदार उत्तेजक विज्ञापन
धीया-पूताकेँ कए रहल परेशान
'इमनदारीक बात करबाक हो तँ करू प्रधानमंत्रीसँ'
बेशी भाड़ा देबाक प्रतिरोध करबा पर कहि उठैत अछि टैक्सी ड्राइवर
वास्तवमे बोलती बन्द भऽ जाइछ।
आइ संकटे-संकट अछि चहुधा
मूल्यक संकट
पर्यावरणक संकट
जनसंख्या-वृद्धिक संकट
सात्विकताक संकट
समाज-रचनाक संकट
जीव-जन्तुपर दया करबाक संकट

आ एहि सभ संकटक जड़िमे अछि राजनीतिक अपराधीकरण
विदेशी सिकंजा
नेता अफ़सर गुंडा
पूँजीपतिक कसैत फंदा
शिखरपर पहुँचल किछु लोक
आकण्ठ अछि डूबल भ्रष्ट्राचारमे सदाचारक दैत दोहाइ
कए रहल लंगटै
मूल्यक एहन विखण्डन
जे कोनहुँ ठाम आंगुर धरब मोश्किल
नव पीढ़ी पोथी नहि पढ़ैछ
इलाक्ट्रानिक मिडियाक पाछाँ बताह भेल युवा-वर्ग
क्रिकेटक झुनझुना बजा रहल अछि आ मजबूरीक नाम महात्मा गाँधी 'क
एलान करैछ।
उन्नैसम शताब्दीक पूँजीवाद—अपेक्षया
ओजस्वी-तेजस्वी पूँजीवाद छल मुदा
बीसम शताब्दीक पूँजीवाद ? ओ भोगवादपर आधारित
के०एफ०सी० आ पेप्सी-कोला खानदानक अछि
ओकर आक्रामक मनोवैज्ञानिक प्रभाव
बढ़ि रहल सुरसा जकाँ नित्तहुँ युवा तुर्क पर
दूषित कए रहल रक्त सरिपहुँ
लोक तन्द्रामे एकैसम शताब्दीक सुख-स्वप्न देखि मुस्किया रहल अछि
नेताकेँ ठेंगा देखा रहल अछि

मानसिक आलस्य कामचोरी आ काहिली
बनि गेल अछि हमर राष्ट्रीय चरित्र—
पूँजीवादक नहि अछि कोनो विकल्प
उपभोक्तावाद आ ताहिसँ जनमल दादागिरी आओर त्रासद भऽ उठल अछि
मुक्त बजार—
शोषण अछि छोट-अविकसित देशक लेल
बहुराष्ट्रीय कम्पनीसभ आक्रमणक माध्यम अछि,
प्रदर्शन अछि, देखाबा अछि भूमण्डलीकरणक
मुदा नहि जाइछ ककरो दृष्टि एहि रक्तबीजपर—
नेता अरब-खरब उगाहबाक पाछाँ आन्हर
राष्ट्रीय व्यक्तित्वक अकाल
बाँकी सभ लुल्ह-नाङर
दाउनमे जोतल बरद जकाँ लोकक मुँह जबबाक कएल जा रहल प्रयास
खुलेआम लोकक खरीद-फरोख्त
चुनावक तैयारी, अस्त्र-शस्त्रक जमाव,
सरगर्मी, गहमागहमी
मध्यावधि चुनावक सिलसिला, अन्तहीन क्रम
धर्मनिर्पेक्षताक कवच
साम्प्रदायिकताक ढाल केर बिक्री बढ़ि गेल अछि देशमे
जातिवादक विष-वृक्ष रोपल जा रहल
जातीय सेना अपन कमाल देखा रहल
नर-संहारक क्रम भंग नहि होइछ

नामी–गिरामी डकैत, सातीर बदमाश आ असामाजिक तत्वसँ
सुशोभित अछि हमर 'पार्लियामेंट'
समाप्त भऽ गेल कार्य–संस्कृति
चौपट भऽ रहल देशी उद्योग–धन्धा
जनताक दोहन–पर–दोहन
मँहगाइक सूर्पनखाक नर्तन
विकासक गति मन्द करबाक विदेशी कुचक्र
मूल्य, संस्कृति, सामाजिक मानदण्ड, वैधानिक दंड–संहिता
सोच–विचार सभ भऽ रहल अपदस्थ
एक्कहु धवल चरित्र नहि देखना जाइछ
अनेकमुखी अफवाह फैला रहल मुट्ठी भरि दलाल
आ ओएह देशक अहम फैसला कए रहल सम्प्रति!
❑

गुजरातनामा

बड़ लाज लगैछ हमरा गुजरात
नहि बहा पौलहुँ शोणित
अहाँक लेल हम जनसंहारपर
पर्दा डालबाक प्रयास वा सुरक्षाक
दाबा करबाक प्रचेष्टा
नहि भऽ सकल जखन कामयाब तऽ योजनाबद्ध भऽ
प्रयोजित हिंसा–लूटि–मारिक सरंजाम
एकट्ठा कए
गोली–लाठी–गुंडाक बले
हिन्दुत्वक बिहाड़िमे
अहाँ भने मना लीअ क्षणिक विजयोल्लास
कऽ लीअ तत्काल क्रूरताक नंगा नाच
मुदा नहि बिसरि पाओत लोक
किन्नहुँ नहि बिसरि पाओत जनशक्ति
मनुष्यताक विरुद्ध क्रूरतम दृश्य
नहि बिसरि पाओत मसिजीवी तरुआरि
दुधमुँहा बच्चा आ स्त्रीगण परकयल गेल
सशस्त्र युवा–वर्गक आक्रमण
बर्बरताक जघन्य काज

लिखल जाइत रहल खूनसँ साम्प्रदायिक फाँसीवादक इतिहास
देश तमाशबीन बनल
देखैत रहल चुपचाप योजनाबद्ध आतंकवादी
गर्भवती महिलाक पेट फाड़ि
बच्चाकेँ टुकड़ी-टुकड़ी काटि करैत रहल पिशाच अट्टहास
परिवारक एक-एक सदस्य
काटल जाइत रहल—खचाक-खचाक, छपाक-छपाक
सब देखैत-सुनैत रहलहुँ हम
बर्बरताक एकटा नव कीर्तिमान जघन्यताक
अप्रतिम मिसाल
पुलिस आ अधिकारीलोकनिक कर्त्तव्यहीनताक
अन्यतम उदाहरण
आ एहि सभक बीच हठात् भऽ गेल पटाक्षेप
नाट्य-समाप्तिक घोषणा
विजयोल्लासक जसन
नव मंत्रीमंडलक गठन
चश्मदीद गबाह जकरा मुँहे सुनल हम
मानवीय बर्बरताक इतिहास
बड़ लाज लगैछ हमरा नहि
बहा पौलहुँ शोणित अहाँक लेल गुजरात.........
नहि पूरि सकलहुँ हकार............
नहि दए सकलहुँ संग...............



चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः

धर्म जाति आ सम्प्रदायमे विभक्त
हमर ई देश
अप्रतिम भूलोकमे ई भूमि
जघन्यसँ जघन्य अपराध करबामे नहि रहैछ पाछाँ
'भोट बैंक'क सुरक्षा हेतु जा सकैछ नीचताक कोनो सीमाधरि
नहि छैक कोनो काज दुस्साध्य एतुक्का नेत्री-वर्गक लेल
पैर पकड़ब किंवा पानिजकाँ टाका बहायब
मधुसिक्त वाणीक चासनीमे बोड़ि
निमू जनताकेँ फँसायब भए गेल छैक ओकर प्रधान कार्य
संसारक सभसँ पैघ प्रजातांत्रिक देशमे
मुट्ठीभरि लोक
सातीर बदमाश क्रिमनल कए रहल अछि राज डंकाक चोटपर खुलेआम
बाँकी सभ शोषित दलित निर्वाक सर्वहारा
नहि छैक ककरो लाज-लेहाज गत्रमे कनियों
पसरल छैक शांति चहुधा
अन्हर-बिहारिसँ पूर्वक निस्तब्धता
एक लुत्ती आगि कए दैछ सुड्डाह सब किछुकेँ बहुधा

बुद्धिजीवी तमाशवीन
दर्शक बनि ठाढ़ एक कोनमे चुपचाप निर्लिप्त
एहना स्थितिमे कोना आओत क्रांति, एकटा परिवर्तन वा बदलाव
एक नव प्रजातिक मनुक्ख तैयार कयल जा रहल एहि देशमे पसारबाक लेल भ्रांति
'हाइ ब्रीड'क लोकहु भरैत अछि पानि तकरा आगाँ
सम्मान आ शराफैत केर भाखा ओ नहि बुझैछ कनियो
'किडनैप' करैछ माल-जालजकाँ मनुक्खकेँ
अगबा करैछ लोकक भविष्यकेँ
स्कूलमे पढ़ैत नेना-भुटकाकेँ करैत लाख-लाख टाकाक डिमांड
मचि जाइछ हाहाकार घरमे आक्रोशक स्फुलिंग
बाहर शब्दक बौछार तमतमायल चेहरा
गाम घर
कस्बा शहर
महानगर
पसरि जाइछ सभतरि एकटा आतंक एकटा भय
हुरारजकाँ पैसि जाइछ लोकक मोनमे एकटा अदक्क
सन्हिया जाइछ नश-नशमे एकटा सुरसुरी
मुदा नहि पकड़ल जाइछ
नहि पकड़ल जाइछ अभियुक्त कहियो पुलिसिया माया-जाल
नहि लागए दैछ ककरो गाल आँखि मुनने रहैछ सरकार सदिकाल
आ साँढ़ बनि चरैत ओ देखना जाइछ हरियर-हरियर खेत
अलशेसियन कुकूर बनि खाइछ गुदगर-गुदगर मासु
हड्डी चिबाबैछ

लतखुरदनि करैछ सभटा फसिल बमकल पाड़ा
पुलिस भए जाइछ सक्रिय
कमीशन बैसाओल जाइछ
हाथीक दाँत खयबाक आर देखयबाक आर
सरकसक बाघ कूदय-फानय लगैछ
प्रारम्भ भए जाइछ नाटकक रिहर्सल
बंगालक यात्रापार्टीजकाँ
चलैत रहैछ कार्य-क्रम मासक मास
रिमोट कंट्रोलसँ सभटा काज सुतारल जाइछ मुदा
मुदा नहि भए पबैछ जनता दिसिसँ कोनो उत्पात, लड़ाइ-दंगा वा फसाद
लोक बनल रहैछ प्रशांत महासागर
ओछौने रौदक वसंती चादरि गपिआइत रहैछ
सरकारकेँ दय बिखिन-बिखिन केर गारि
मिथ्या पुरुषार्थक शर्बत पिबैत रहैछ
भांग घोंटैत कापुरुषताक परिचय दैत रहैछ
कोनो अगत्ती नेनाजकाँ
हुक्कामे मुतबाक प्रयास करैत रहैछ हारल बिलाड़ि जकाँ
धुरखुर नोचबाक प्रक्रियामे खूने-खुनाम कए लैछ
आत्म-तुष्टिक ड्रामा सुखान्तसँ दुखान्त भए जाइछ।

अदौकालसँ ई देश -
हैजा मलेरिया यक्ष्मा आ कैंसरसँ रहल अछि आक्रांत
पीड़ित रहल अछि एतुक्का लोक बाढ़ि आ रौदीसँ, अशिक्षासँ

काटरप्रथासँ
नाना रकमक बेमारीसँ
गिरहत-मालिकक डांट-फटकारसँ गंजनिसँ
पिटाइत रहल अछि एतुक्का जौन-बोनिहार जमिंदारक जुत्ता-लातसँ
गड़ैत जाइत रहल अछि फैझतिसँ
बेगारी करैत-करैत खियाति रहलैक अछि हाथ
खटैत-खटैत जुआन बेटा भए गेलैक अछि कारांकुल
माथमे नहि तेल ने सिन्दूर
सह-सह करैत लीख आ सुखटीसन चोटकल गाल
हिसारवालीक भए गेलैक अछि निष्प्रभ भाल लाजसँ मुँह लाल
कुपोषणसँ फूलल नेनाक कोहा-पेट आ सुखायल बोंग जनु हो
अमेरिकन राकेट
नाना रकमक रोगसँ काल-कवलित
होइत रहल अछि एतुक्का भविष्य
असमहिमे वर्तमान
काँच बाँसक कोपर जकाँ होइत रहल अछि पीयर ढाबुस
आ आमक ललका पल्लव
कोरामिन इंजेक्शन देलो सन्ताँ नहि रहि पबैछ अक्षत
लाल होइत रहल अछि पीत
कौखन डाक्टरक असावधानीसँ
तऽ कौखन नरसक किरदानीसँ बच्चा
मायक पेटहिसँ स्वर्गक यात्रा करैत आयल अछि
आ डाक्टर वैद्य हकीमक बनि गेलैक अछि एकटा गैंग हेबनिमे

उड़एबाक लेल माल
पोखरिसभमे खसौने अछि महाजाल
भागि कए कतय जेताह सार एहि चौकबंदीसँ बाहर आर
कहियोक भगवान
आइ बनि गेल छथि हैवान
जे नहि करबैछ इलाज ओ परम सुखी
आ जे पड़ि जाइछ गैंगक हाथ ओ महा दुःखी
तकर चूसि लेल जाइछ संतोलाक रस आ फेकि देल जाइछ
नालीमे सिट्ठी जकाँ दफना देल जाइछ कब्रमे सिसोहि कए रक्त-मज्जा-मांसु
अनेरुआक जनमल सन्तानजकाँ
आ एहि व्यापारमे विदेशी कम्पनीसभक अछि बड़का सहयोग
    कि दबाइक नामपर बेचल जाइछ जहर
    कि पानिक नामपर बाँटल जाइछ माहुर
    कि नव बोतलमे परसल जाइछ पुरान आशव
    कि लोककेँ आस्ते-आस्ते बनाओल जाइछ मदोन्मत्त
                निरुपाय आ मृतप्राय
सभ किछु घटित होइछ—
विश्वसनीयताक नामपर
अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धक नामपर
विदेश नीति आ कूटनीतिक नामपर
गरदनिपर तनल रहैछ सदिखन एकटा बन्दूक एकटा ऑक्टोपस
एकटा अज्ञात लोकक पंजा आ तकर जानलेबा दवाब
देश सहजहि अनुभव करैछ

आतंकक सनसनी आ अस्तित्वक संकट
नहि चाहलो सन्ताँ हस्ताक्षर भए जाइछ
कृत्रिम हास्यक फुहार अखबारपर पसरि जाइछ
एक अछार पानि बरिस जाइछ सत्ते
कतेक मजबूर भए गेल अछि लोक! आइ

नव युगमे अनेकानेक रोगक भेल अछि आक्रमण हठात् :
राजनीतिक संक्रामक रोग
दूरदर्शन कम्प्यूटर आ मीडियाक रोग फैशन आ अपसंस्कृतिक रोग
भूखक चिरन्तन रोग
मुदा गरीबीसँ बढ़िकए अछि नहि कोनो रोग
एकर औषधिक नहि भेल अछि अद्यापि अनुसन्धान
संसारमे पृथ्वी नामक उपग्रहमे
भारत पूर्वहिसँ अछि आक्रान्त एहि रोगसँ विकलांग
विश्वमे विख्यात
गरीबी दूर करबाक योजनापर योजना
प्रदर्शन भाषण उद्घाटन जाज शास्त्रीय संगीत कौवाली गजल
सोनिया गाँधी सानिया मिर्जा सचिन तेन्दुलकर अमिताभ बच्चन आ ऐश्वर्या राय
सभक जुटान एक संग
सुन्दर सरंजाम पेय चोष्य आ खाद्य पदार्थक नायाब इंतजाम
जनताकेँ फुसलयबाक विज्ञप्ति :
गरीबी दूर करबाक गारंटी
नौकरी देबाक प्रतिबद्धता
स्वच्छ शांत शासन व्यवस्था

शिक्षामे आमूलचूल परिवर्तन
लोकमे बाँटल जाइछ बहुमुखी योजनाक इश्तिहार
चुनावक समय संनिकट
कश्मीरसँ कन्याकुमारीधरि नेतालोकनिक जबर्दस्त दौरा
व्यस्ततम कार्यक्रमकेँ कयल जाइछ हेलीकाप्टरसँ पूरा
कि धीयापुताकेँ हाथमे थम्हा देल गेल हो झुनझुना
कि कनैत नेनाकेँ दए देल गेल हो एकटा चिक्कन-चुनमुन विदेशी
खेलौना
कि दूरदर्शनक माध्यमसँ युवावर्गमे बाँटल गेल हो
प्लेटक-प्लेट नारी स्तन-जाँघक
नमूना
कि एहि देशमे सभ भए गेल अछि धर्मनिरपेक्ष
मुँह देखि मुंगबा पड़ोसबाक परम्परा अछि प्राचीन सापेक्ष
शहरसँ गामधरि
संसदसँ सड़कधरि
बूढ़सँ जुआनधरि
कए रहल अधिकांशत: एही नियमक पालन वृद्ध होथि वा नवीन
नहि भए रहल कतहु अंग-संचालन
नहि सुनल जा रहल कोनो आक्रोशक स्वर बम-विस्फोट
नहि देखना जाइछ कोनो आक्रामक तेवर कोनो भगत कोनो बिस्मिल
कोनो आजाद
से किएक
से किएक—अनुत्तरित रहि जाइछ यक्ष-प्रश्न!
❑

मुक्त भेल बजार

मुक्त भेल बजार
बजारक मारि लोकपर अतत्तह उपरसँ
दृश्य मीडियाक चाप
टी०वी० फ्रिज भऽ गेल अछि आजुक प्राथमिक जरूरति
बजारू संस्कृति
भोगवादी वस्तु–जातकेँ बना देलक अछि अनिवार्य
उपभोक्तावादी संस्कृति
लोककेँ लोकसँ
देलक अछि काटि काँच आमजकाँ अनेकहुँ स्तरपर
मनुक्खकेँ बाँटि देलक अछि जाति आ धर्मक नामपर
साम्प्रदायिकताक खाधिकेँ कयलक अछि आर गँहीर
आपसी सौमनस्यकेँ
मेल–मिलापकेँ
कयलक अछि विखण्डित–गम्भीर
पीसि देलक अछि चटनीजकाँ लोकक जिनगीकेँ
जिजीविषाकेँ
युग्मेच्छाकेँ
युयुत्साकेँ

मुदा नहि हारल अछि मनुक्ख निराश–हताश नहि भेल अछि कहियो
मनुक्खे अछि सभ किछु
मनुक्खेक बारेमे सोचब अछि पहिल विचार
सैह अछि आजुक अनिवार्यता
रोटीक जोगारक पहिने करी बात
सैह अछि आजुक प्राथमिकता

मुक्त भेल बजार
हमाममे नहाइत लोक जकाँ नाङट
नाना प्रकारक भोगवादी वस्तु–जातसँ
पटि गेल अछि हाट–बजार महानगरक बड़का–बड़का माल कंप्लेक्स बिग बजार
उत्पन्न करैछ फैशनसँ खाद्य पदार्थधरिक प्रतियें आकर्षण
आमंत्रित करैछ लक्ष्मीपुत्रक दुहिता–वनिताकेँ
किनबाक लेल पैड्स प्लास्टिक पोस्टेरिअर्स इलैक्ट्रानिक वाइब्रेटर डिल–डो आदि
चुम्बकजकाँ खिचैछ ग्राहककेँ विदेशी मालक गुरुत्वाकर्षण
पसरि गेल अछि सम्पूर्ण देशमे
मल्टी नेशनल कम्पनीसभक महाजाल आ कूद–फान कए रहल रोहु भाकुर बोआर
देशी उद्योग–धन्धाक फूटल कपार
कल–कारखानासभ भऽ रहल बन्द सहजहि
मजदूरक अवस्था खराब
बाल–बच्चा कोना रहतैक—नहि छैक तकर कोनो जोगार

नहि छैक एहि दिस ककरो धेयान सरिपहुँ
बूरि बना रहल लोककें वैश्वीकरणक नाम पर व्यवस्था आ मीडियाक भतार
फिरीशान अछि गरिबहा
हुक-हुक कए रहल सर्वहारा परिवार
धनी आर धनी बनि रहल दिन-राति
नहुँ-नहुँ गुमराह कए रहल मध्यवर्गकें पूँजीपति-समर्थित सरकार
एकसँ एक प्रलोभन योजना नायाब
आकास छूबाक उपक्रममे एहि वर्गक लोक
कोनो गेट्स वा मित्तल बनवाक सपना देखैत
कच्छर काटि रहल पिजरामे बन्द सूगाजकाँ नाना वर्जनाक बीच
कि नहि भेटैछ बहरयबाक बाट कोनो माध्यम कोनो उपाय
संकटमे प्राण लोक अछि बेहाल व्यांकुल त्रस्त
भेल अछि सभ पस्त
मँहगीक मारिसँ शिकस्त
शासन-तंत्रसँ सभ ग्रस्त
मुदा कटिबद्ध अछि सभ केओ करए लय उग्रतम प्रतिवाद
इनकिलाब जिन्दावाद
तनल छै बाँहि बन्हल मुट्ठी
सुशोभित हाथमे लाठी-गँरासा बल्लम-बर्छा आर छै तरुआरि
कतहु छै तीर-धनुषक बाढ़ि

फुटै छै बम

कतहु छै गरजि रहल पिस्तौल राइफल तोप रिकाँयललेस गन

कतहु के०जी० ट्वेन्टी फोरक भीषण मारि
प्रकम्पित कए रहल सभ शत्रुकें ललकारि
जन-समुद्रक मारि बेसम्हार
लड़त ओ अन्तधरि शासन व्यवस्थासँ ओकर दलाल चाटुकार चारणसँ
करत सचमुच गोरिल्ला युद्धकें साकार
बूझि गेल अछि लोक बजारक भाव
कि वैश्वीकरण अविकसित देशक हितमे खतरनाक छैक.....
कि भूमण्डीकरणमे महाशक्तिक पिछलगुआ बनबाक अर्थ
अनुस्यूत छैक.....
कि मुक्त बजारक पाछाँ अधिकसँ अधिक माल खपत कए
एहि शस्य-श्यामल भूमिपर पैर जमयबाक पैगाम छैक.....
कि एहना स्थितिमे पूँजीवादक विकल्प सामाजिक संघर्षशीलता छैक.....
कि आइ संघर्षधर्मी तर्काधारित परिवर्तनकामी अभियानक
आवश्यकता छैक.....





वीरेन्द्र मल्लिक

नाम : वीरेन्द्र मल्लिक

जन्म : 3 जनवरी 1937

स्थान : परसौनी, मधुबनी

शिक्षा : पीएच० डी०

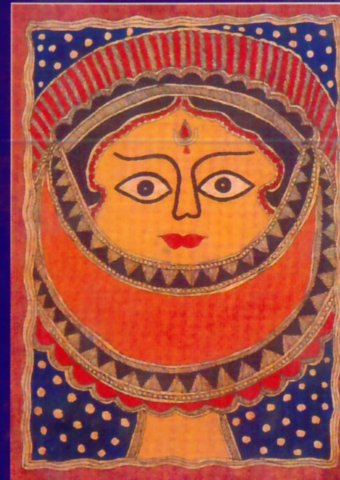
सम्पर्क : 67, लेक इस्ट,

सिक्थ रोड, संतोषपुर,

कोलकाता – 700 075

दूरभाष : 033-24169219

वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाक विकृत स्वरूप आ मानव-अवमूल्यनक परिप्रेक्ष्यमे कविक सशक्त विद्रोही तेवर ओहि व्यवस्थाकेँ नकारैत आमूल परिवर्तनक निमित्त सशस्त्र क्रांतिक उद्‌घोष करैछ तथा नव समाज-व्यवस्थाक प्रेरणा दैछ। एहि हेतु ओ व्यंग्यक चुटकी आ छिटकी मारि सहस्त्रमुखी प्रताड़नासँ मुक्तिक मार्ग प्रशस्त करबाक आह्वान करैछ। एहि मे जतय जनसामान्यक प्रति अपार सहानुभूतिक दिग्दर्शन होइछ ततय पूँजीवादक विरुद्ध जनान्दोलनक प्रबल आकांक्षा व्यवस्थाकेँ ललकारि रहल अछि। प्रतिपक्षमे ठाढ़ हुनक कविता एहि युद्धमे कारगर हथियारक काज करैछ।



अग्नि-शिखा